नूतन निष्काम पत्रिका

नूतन निष्काम पत्रिका ❐ वर्ष-7 ❐ अंक-२ ❐ मुम्बई ❐ फरवरी-2016 ❐ मूल्य-रु.9/-

स्थापना वर्ष:१९४२

शिवरात्री का पूजन और ऋषि बोध

आर्य समाज सान्ताक्रुज के ७२वे वार्षिकोत्सव के कुछ चित्र

वार्षिकोत्सव पर डॉ. वसुधा शास्त्री प्रवचन करते हुए तथा साथ में है श्री अरविन्द शास्त्री

मंचासीन विद्वतवृन्द बायें से आचार्य संजीव मुजफ्फरनगर स्वामी यज्ञमुनि सरस्वती एवं डॉ. सोमदेव शास्त्री

समारोह में उपस्थित श्रोता गण

यज्ञब्रह्मा डॉ. वसुधा शास्त्री एवं वेदपाठी गण

काशी शास्त्रार्थ महोत्सव संस्मरण

डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे

काशी के दुर्गाकुण्ड आनन्दबाग में जहाँ सन् १८६९ में स्वामी दयानन्द सरस्वती का चालीस पौराणिक विद्वानों के साथ मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ हुआ था, उस ऐतिहासिक स्थली पर मुझे जाने का अवसर प्राप्त हुआ वह एक अविस्मरणीय घटना थी। मैं लातूर से पुणे होकर वाराणसी पहुँचा जहाँ १४६ वाँ शास्त्रार्थ महोत्सव होने जा रहा था। आर्य उपप्रतिनिधि सभा वाराणसी द्वारा आयोजित इस महोत्सव में एक वक्ता के रूप में मुझे आमन्त्रित किया गया था। पहले दिन श्री प्रमोदजी आर्य की व्यवस्था निर्देशानुसार मैं भोजूवीर आर्यसमाज काशी में रूका। दूसरे दिन दुर्गाकुण्ड समीप आनन्द बाग में जहाँ कार्यक्रम निश्चित था अन्य विद्वानों के साथ पहुँचा जहां आर्य जगत के जाने माने विद्वान पधारे थे उनमें हरियाणा के स्वामी सुरेन्द्रानन्द, कानपुर के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री रवीन्द्रकुमार आर्य, रेवाडी हरियाणा की श्रीमती सुनीता शास्त्री, स्वामी केवलानन्द, प्राध्यापक श्री शिवनारायणसिंह गौतम तथा अमेठी से पधारे डॉ. श्री प्रशस्यमित्र जी आदि प्रमुख थे।

दुर्गाकुण्ड के समीप जहाँ स्वामी दयानन्द जी ने वेदों में मूर्तिपूजा है वा नही? इस विषय पर काशी के विद्वानों से शास्थार्थ किया था उस मिट्टी को स्पर्श करके मैं सिहर उठा और स्वयं को धन्यभागी होने का अनुभव करने लगा। मैं काशी शास्त्रार्थ पर पुस्तक लिखने विषय में खोज पूर्ण साहित्य पढ चुका हूँ और बहुत सारा लिखा भी चुका हूँ, इस दृष्टि से भी यह यात्रा मेरे लिए उपादेय सिद्ध हुई। मैंने आनन्दबाग में वह स्थान देखा जहाँ काशीराज महाराजा ईश्वरी प्रसाद नारायणसिंह की उपस्थिति में यह ऐतिहासिक शास्त्रार्थ हुआ था। वह परिदृश्य देखकर मैं अनुभव करने लगा कि किस तरह स्वामीजी चारों और से काशी के पौराणिक शास्त्रार्थ महारथियों से घिरे हो कर भी उनके चक्रव्यूह को तोडकर बाहर निकले और विश्वविजयी हुए। यह अनुभव इसलिए भी महत्वपूर्ण था, कि यहाँ आने से पूर्व स्वामीजी को कोई नहीं जानता था। काशी शास्त्रीर्थ में विजयी होने के बाद ही उनकी गणना विश्व स्तर पर वेदों के उद्भट विद्वानों में होने लगी। काशी शास्त्रार्थ में दिग्विजय प्राप्त करने के पश्चात् उन्हें देश के अनेक भागों से व्याख्यानों के लिए आमन्त्रित किया जाने लगा। ब्रह्म समाज के नेता देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने कोलकाता आने के लिए बहुत आग्रह किया। उस समय ब्रिटिश भारत की राजधानी कोलकाता थी। कोलकाता से स्वामी दयानन्द जी की दिग्दिगन्त प्रसिद्धि होने लगी। मैंने दिनांक २१/१/२०१५ के भाषण में महाराष्ट्र और काशी का ऐतिहासिक सम्बन्ध दर्शाते हुए कहा कि-स्वामी जी ने सन् १८६९ में शास्त्रार्थ से काशी जीतकर तथा सन् १८७५ में महाराष्ट्र के मुंबई में आर्यसमाज की सर्वप्रथम स्थापना कर सामाजिक और धार्मिक सुधार के क्षेत्र में संपूर्ण विश्व को जीत लिया।

मुंबई अंग्रेजों की खुली सोच वाली नगरी रही है तथा महाराष्ट्र के समाज सुधारकों की कर्मस्थली भी रही है। स्वामीजी के इन कार्यों को अग्रेंजों और समाज सुधारकों ने खुले मन से सराहा है।

महाराष्ट्र और काशी का सम्बन्ध सर्व प्रथम इस कारण से भी दृढ़ रहा है कि सत्रहवीं शदी में छत्रपती शिवाजी के जीवन की महत्वपूर्ण घटना भी काशी से जुडी हुई है। हुआ यह था कि महाराष्ट्र के कर्मकाण्डी ब्राह्मणों ने छत्रपती शिवाजी के राज्यभिषेक का विरोध किया था। शिवाजी महाराज के क्षत्रियत्व पर सवाल उठाते हुए उन्होंने राजसिंहासनारूढ़ होने के उनके अधिकार पर प्रश्न चिन्ह उपस्थित किये। लेकिन काशी के वेदमूर्ति धर्माचार्य गागाभट्ट ने यह कहकर छत्रपती शिवाजी के राज्याभिषेक की स्वीकृति दी कि विदेशी मुस्लिम आक्रान्ता हिन्दुओं पर अत्याचार कर आर्यावर्त के सिहांसन पर बैठ सकते हैं तो एक हिन्दू राजा जिसने चार चार पातशाहियों कों रौंदकर जन्म एवं कर्म से स्वयं को क्षत्रिय सिद्ध कर दिया हो और जो राजस्थान के सिसोदिया वंश का वंशज हो जिसका राज्याभिषेक वेदादि शास्त्रों से स्वयं सिद्ध है, उसका राज्यारोहण क्यों हो नहीं सकता? यदि महाराष्ट्र के कर्मठ ब्राह्मण उनका राज्यभिषेक न करें, लेकिन काशी का यह ब्राह्मण उनका वेदोक्त पद्धति से राज्यभिषेक करेगा। इस प्रकार ६ जून १९६४ ई. को क्षत्रिय कुलावतंस छत्रपती शिवाजी महाराज को बडे समारोह के साथ महाराष्ट्र के राजसिंहसन पर आरूढ़ किया गया।

इसी तरह काशी और महाराष्ट्र को जोडने वाली एक और पूर्व मध्यकालीन ऐतिहासिक घटना का भी अपने व्याख्यान में जिक्र किया जो दोनों प्रदेशो को सांस्कृतिक दृष्टि से जोडती है। महाराष्ट्र के संत शिरोमणि ज्ञानेश्वर महाराज के पिता विठ्ठल पन्त अत्यन्त वैराग्य वृत्ति के थे। उनका विवाह रुक्मिणीबाई से हुआ था। गृहस्थ में मन न लगने और वैराग्य वृत्ति में वृद्धि होने के कारण उन्होंने काशी के संन्यासी स्वामी रामानन्द से संन्यास की दीक्षा ली। रामानन्द स्वामी जब दक्षिण की यात्रा पर निकले तब आळंदी गाँव में रूक्मिणी देवी ने स्वामीजी के दर्शन किये। स्वामीजी ने उन्हें पुत्रवती होने का आर्शीवाद दिया। जब रूक्मिणी ने विठ्ठल पन्त, की घटना सुनाई तो उन्हे बडा पश्चाताप हुआ और उन्होंने वापस काशी लौटकर विठ्ठलपन्त को आदेश दिया कि आप वापस गृहस्थ धर्म में लौट जाओ।

विठ्ठलपन्त ने भी गुरु की आज्ञा मानकर फिर से गृहस्थी बनना स्वीकार किया। इस प्रकार स्वामी चैतन्याश्रम फिर से विठ्ठल पन्त बन गये। गृहस्थाश्रम में उनके तीन पुत्र और एक कन्या हुई। सन्त ज्ञानेश्वर का जन्म शकसंवत ११९७ अर्थात् ई.स. १२७५ में जन्म हुआ। इस परावर्तन काल में इस परिवार को अत्यधिक अपमान सहन करना पडा। कर्मकाण्डियों के अमानवीय व्यवहार से पिता और पुत्र दोनों को प्राण त्यागने पडे। संतश्रेष्ठ ज्ञानेश्वर ने ज्ञानेश्वरी जैसा आध्यात्मिक ग्रन्थ आयु के १७ वें वर्ष में रचा जो मराठी का प्रसिद्ध गीता काव्य भाष्य कहलाता है। इसी के साथ उन्होंने अनेक आध्यात्मिक ग्रन्थों की रचना की। उन्होंने सामाजिक जीवन में उनकों कष्ट और अपमान सहन करते हुए महज २१ वर्ष की आयु में स्वेच्छा देह त्याग (समाधि) कर असार संसार को त्याग दिया।

सीताराम नगर, लातूर (महा)
पिन: कोड - ४१३५३१
मो. : ०९९२२२५५५९

आर्य समाज सांताक्रुज़, मुम्बई का मासिक मुखपत्र
वर्ष : ७ अंक २ (फरवरी - २०१६)

- दयानंदाब्द : १९२, विक्रम सम्वत् : २०७३
- सृष्टि सम्वत् : १,९६,०८,५३,११६

प्रबन्ध संपादक : चन्द्रगुप्त आर्य
संपादक : संगीत आर्य
सह संपादक : संदीप आर्य
कार्यकारी संपादक : विनोद कुमार शास्त्री
लालचन्द आर्य, रमेश आर्य,
यशबाला गुप्ता.

विज्ञापन की दरें : शुल्क

- पूरा पृष्ठ : रु. ३,०००/-
- १/२ पृष्ठ : रु. २,०००/-
- १/४ पृष्ठ : रु. १,५००/-
- विशेषांक की दरें भिन्न होंगी ।
- एक प्रति : रु. ९/-
- वार्षिक : रु. १००/-
- आजीवन : रु. १०००/-

वर्गीकृत विज्ञापन
रु. १०/- प्रति शब्द, न्यूनतम रु. ५००/-
चैक/डीडी/मनी आर्डर आदि 'आर्य समाज सान्ताक्रुज' के नाम से ही भेजें, मुंबई के बाहर के चैक न भेजे। विज्ञापन सामग्री १० तारीख तक भेजें। 'नूतन निष्काम पत्रिका' का मुद्रण ऑफसेट विधि से होता है।

पता : आर्य समाज सांताक्रुज़
(विट्ठलभाई पटेल मार्ग) लिंकिंग रोड, सांताक्रुज़ (प.), मुंबई -५४. फोन : २६६० २८००, २६६० २०७५

अनुक्रमणिका	पृष्ठ सं.
काशी शास्त्रार्थ महोत्सव संस्मरण	२
सम्पादकीय	३
सृष्टि का संचालक निराकार परमपिता परमात्मा है	४-६
बौद्ध और जैनधर्म का मिथ्या अहिंसावाद	७-९
हृदय रोग	९
जल-विच मीन प्यासी/वेद एवं ज्योतिष सम्मेलन	१०
आज की गम्भीर चुनौती राष्ट्रीय राजनीति कैसी हो...	११
महर्षि देव दयानन्द सरस्वती जी प्राचीन श्रेणी...	१२
''रहीमन-सीख''/'वे' स्वामी दयानंद आर्य समाजी..	१३
माणिकराव भोसले गौरव स्थिर.../वेद मार्ग पर चलो	१४
आर्यसमाज के नियम (बम्बई)	१५
जवानों तुम्हारी जवानी कहाँ है?	१६
राज्यस्तरीय युवा चेतना शिविर सम्पन्न	१६

सम्पादकीय

ऋषि ने बोध कराया था

बालक मूलशंकर को महाशिवरात्री की घटना पर जिज्ञासा हुई। इसी सच्ची घटना को हम प्रत्येक महाशिवरात्री पर दोहराते हैं। इसी घटना ने बालक को सच्चे शिव की खोज के लिये प्रेरित किया। बालक मूलशंकर अपने आलीशान, सम्पन्न घर को छोड़कर सच्चे शिव की खोज के लिये निकल पड़ा। उनकी जिज्ञासा की परिणित गुरू विरजानन्द की कुटिया में हुई। कुटिया से निकल कर यह बालक जो दयानन्द सरस्वती बन गया था, वेदोद्धारक बनकर निकला। महर्षि ने गुरू की आज्ञा का अहर्निश पालन किया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जब कार्य क्षेत्र में उतरे तब उन्हें घोर विरोध का सामना करना पडा था। तब भी वे विचलित नहीं हुए। तथाकथित सम्प्रदाय, ईश्वर के नाम पर भोली-भाली आर्य जनता का शोषण करने वालों के खिलाफ अकेले महर्षि दयानन्द ने पाखण्ड खण्डिवी पताका फहरायी थी। इस वर्ष दिनांक 07 मार्च 2016 को हम फिर ऋषि बोधोत्सव मनायेंगे। यह समय हमारे कार्यों के अवलोकन का है।

ऋषि ने हमें वेद मार्ग पर चलना सिखाया था। ईश्वरीय ज्ञान वेद ही हैं। यह हमें बोध कराया था। वेद का ज्ञान मानव मात्र के कल्याण के लिये है। स्त्रियों को भी वेद पढने का अधिकार है, यह बोध कराया था। वर्ण व्यवस्था वैदिक सामाजिक व्यवस्था जन्मगत् नहीं थी, वरन कर्म और योग्यता पर आधारित थी। ईश्वर मूर्ति में नहीं है, यह बोध कराया था। सिर्फ कर्मकाण्ड तक सीमित न रखते हुए यज्ञ को ईश्वरीय व्यवस्था का प्रतीक मानते हुए यज्ञीय जीवन जीने की प्रेरणा का बोध कराया था। आर्य समाज की स्थापना वैदिक धर्म और सिर्फ वैदिक धर्म के प्रचार के लिये ही की थी। आइये ! ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर हम अवलोकन करें कि हम ऋषि के बताये मार्ग पर कितना आगे बढ़ पाये हैं !

- संगीत आर्य- 9323 573 892

नूतन निष्काम पत्रिका वर्ष-७ अंक-२ मुम्बई फरवरी - २०१६ | पृष्ठ-०४ | मूल्य- रु. ९/-

सृष्टि का संचालक निराकार परमपिता परमात्मा है

- डॉ. गंगाशरण आर्य

जैसे मकड़ी किसी बाहर के पदार्थ को न लेकर अपने अन्दर विद्यमान पदार्थ से ही जाला बनाती है और उसके बाद उस जाले को अपने अंदर ही ले लेती है उसी प्रकार सर्वव्यापक परामात्मा अपने अन्दर स्थित प्रकृति से जगत् का सृजन करता है और अपने अन्दर ही उस को प्रलय करके स्थित कर लेता है और जैसे पृथ्वी में बीज डालने पर अपना-अपना वृक्ष आता है वैसे ही परमात्मा की सत्ता में जीवों के अपने-अपने कर्म शरीरों का निर्माण करते हैं और जैसे शरीर के अंदर जीवात्मा के स्थित रहने पर काटे हुए नाखून या बाल स्वयं बढ़ जाते हैं। क्षत-घाव स्वयं भर जाता है परन्तु यदि जीवात्मा शरीर से निकल जावे तो काटे बाल नहीं उगेंगे काटे नख नहीं बढ़ेंगे और न घाव ही पूरा भरेगा। जैसे जीवात्मा की शरीर के अंदर सत्ता रहते हुए हैं वैसे ही समस्त ब्रह्माण्ड में महान सत्ता परमपिता परमात्मा के रहने से सृष्टि और प्रलय होते रहते हैं अत: वह चर-अचर सभी का संचालक निराकार परमपिता परमात्मा ही है।

सृष्टि को देखने से उस में सर्वत्र नियम पाया जाता है सूर्य चंद्र आदि की गतियाँ कितनी नियमपूर्वक हैं। प्राणियों के शरीर की रचना कितनी सुव्यवस्थित है। क्या यह सब कुछ किसी नियामक के बिना हो सकता है? यह रचना आदि का नियामक गुण ईश्वर को जतलाने वाले हैं उसकी सत्ता के प्रकाशक हैं। जब किसी वस्तु का साक्षात्कार करते हैं। तब उस के गुणों को देखते हैं गुणों के देखने से गुणी का ही साक्षात्कार समझा जाता है। जैसे जब हम किसी एक पुष्प को देखते हैं यह एक प्रश्न है उस समय हम उस पुष्प के रंग को देखते हैं आकार को देखते हैं इत्यादि ये सब गुण ही तो हैं इन गुणों के देखने से ही पुष्प का साक्षात्कार समझा जाता है अर्थात् रचना को देखकर रचनाकार का ज्ञान हो जाता है कि वह साकार है अथवा निराकार है वैसे ही हम प्रभु की रचना को देखकर ही प्रभु का ज्ञान करते हैं इस के अतिरिक्त जिस प्रकार सूर्य की किरणें संसार पदार्थो का प्रकाश करती हैं वैसे ही किरण के समान वेद की ऋचाएं प्रभु को प्रकाशित करती हैं नास्तिक लोग भी यदि सच्चाई के साथ हठ धर्मिता छोड़कर बुद्धिपूर्वक यदि विचार करें तो उन्हें ईश्वर का निश्चय हो जाएगा।

परमात्मा को जान लेने पर परमात्मा के साक्षात् हो जाने पर संसार का कोई परमाणु भी ऐसा नहीं होता जिस को योगी न जान लेता हो। इसी प्रकार के समाधिस्थ लोगों ने समस्त सांसारिक विद्याओं के भी आविष्कार किये हैं अत: उनके आविष्कारों, अनुसंधानों, ज्ञानों में भ्रान्ति नहीं हो सकती। अन्य लोग जो वर्तमान विज्ञान के आधार पर अनुसंधान करते हैं उन के सिद्धान्त बदलते रहते हैं क्योंकि वर्तमान विज्ञान में यह बात निर्विवाद है कि उस के अंदर बहुत बड़ा भाग अनुमान का होता हैं। यंत्रों द्वारा प्रत्येक बात निर्विवाद है कि उस के अंदर बहुत बड़ा भाग अनुमान का होता है। यंत्रों द्वारा प्रत्येक बात का साक्षात्कार नहीं होता। कुछ को यंत्र से जानते हैं शेष को अनुमान से। परन्तु प्राचीन अनुसन्धानकर्ता ऋषियों का सब कुछ साक्षत्कृत होता था- अत: जितने को वह जानते थे निर्भ्रान्त जानते थे- जिस को नहीं जानते थे उस को नहीं ही जानते थे क्योंकि जीव सर्वज्ञ (सब कुछ जानने वाला) कभी भी नहीं हो सकता।

मनुष्य शरीर के बाहर और भीतर की विचित्र कलाकारी

इस सृष्टि मे प्रभु की प्रत्येक रचना ज्ञान सहित है। शरीर के प्रत्येक भाग में सुडौलपन पाया जाता है। हाथ के अंगूठे की मोटाई से दुगनी कलाई की मोटाई होती है और कलाई की मोटाई से दुगुनी गले की गोलाई होती है इसी प्रकार सारी इन्द्रियाँ (आँख, नाक, कान, जिव्हा, त्वचा आदि) और सब स्थान एक विशेष नाप के अनुपात में बनाए गए हैं। प्राणी भी असंख्यात हैं योनियाँ भी असंख्य। क्या विचित्रता है कि एक का रूप दूसरे से नहीं मिलता। जब से सृष्टि रची है, १ अरब ९६ करोड़ ८ लाख ५३ हजार ११६ वर्ष हो गए, परन्तु आज तक एक भी सूरत दूसरे से नहीं मिली। प्रभु कैसे किस बुद्धि से बनाते हैं?

मनुष्य जब किशोरावस्था को पार होता है तो प्रकृति के प्रति जिज्ञासावान होता है। उसके मन में यह प्रश्न उठते हैं कि मानव का शरीर गर्भ में कैसे बना? प्राण कहाँ से आए? शरीर में प्राणों ने कैसे प्रवेश किया? शरीर में इन्द्रियों की रचना कैसे हुई? पर एक बहुत बड़ा प्रश्न यह है कि कैसे विश्व व्यापक ऊर्जा शरीर के अन्दर आकर बंद हो गई और विभाजित होकर शरीर के हर भाग में पहुँच गई? प्राण कैसे शरीर को छोड़कर चले जाते हैं? ऐसा लगता है कि कोई निर्माण करने वाली शक्ति है जो अंग प्रत्यंग बना रही है। वेद शास्त्र इस का ज्ञान देने का प्रयत्न करते हैं। पर मनुष्य की कमजोरी है वह हर वस्तु को अपनी आँखों से देखना चाहता है। ईश्वर की रचना को इन आँखों से देखा नहीं जा सकता उसकी रचना वह ही जाने।

प्रश्नोपनिषद् के ऋषि कुछ हद तक जिज्ञासा शान्त करने का प्रयत्न करते हैं। आश्वलायन ऋषि के पुत्र कौशल्य ने पिप्पलाद ऋषि से उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर जानने की जिज्ञासा व्यक्त की। ऋषि ने बताया कि द्रव्य पदार्थ और ऊर्जा प्रजापति परमेश्वर के भीतर ही थी। दोनों पदार्थ नृत्य करते करते एक दूसरे से मिल गए तो प्राण शक्ति प्रसूत हो गई। वास्तव में प्राण आत्मा का प्रतिबिम्ब ही है। जैसे जल का साधन हटा लिया जाए तो प्रतिबिम्ब स्वयमेव ही समाप्त हो जाता है। क्योंकि बर्तन में पड़े हुए जल ने प्रतिबिम्ब ही नही बनाया या शीशा हटा लेने से प्रतिबिम्ब समाप्त हो जाता है। शरीर के अन्दर की समस्त संरचना का निर्माण करता तो परमात्मा ही है। जो आत्मा के लिए बनाता है और आत्मा शारीरिक ज्ञानेद्रियों और कर्मेन्द्रियों की सहायता से अपने लिए जीवनोपयोगी साधनोपसाधन का निर्माण करता है। अहं व्यक्ति के विचारों से बनता है। जैसे विचार होंगे वैसे शरीर बनेगा, अहं भी आत्मा से प्रसूत हुआ है। अहं की स्वतन्त्र सत्ता नहीं है। बाहर से शरीर का भरण-पोषण इन्द्रियाँ करती हैं। शरीर में ऊर्जा और प्राणों के खेल से बुद्धि का विकास होता है और उसमें क्षमता व कुशलता आती है।

इन्द्रियों से मनुष्य किसी वस्तु को देखकर उसे सूँघता है, उसकी प्रशंसा सुनता है, उसका स्वाद क्या है? स्पर्श करने से कोमल और कठोर का भेद

जानता है, उसका व्यवहार कैसे किया जा सकता है और उसका लाभ क्या होगा? ये जानकारी मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास करती है। वास्तव में चेतनता ही विशुद्ध जीवन है। भौतिक विज्ञान के पास उत्तर नहीं है। हमें उससे आगे जाना होगा। प्राणों की शक्ति को वही समझ सकता है जो इस संसार से दूर हटकर वैराग्य की भावना से काम करे। मन भी आत्मा के लिए उत्पन्न हुआ है। हर व्यक्ति की जीवन चिन्गारी विशुद्ध जीवन केन्द्र से उठती है। उदाहरण के लिए स्त्री पुरूष के मिलाप से जीवन चिन्गारी नहीं जलती। उदाहरण देखिए स्त्री पृथ्वी है पुरूष आकाश है। आकाश ऊर्जा देता है तो धरती पर फल पैदा होते हैं यदि धरती में उर्वरा शक्ति न हो तो जीवन चिन्गारी नहीं जलेगी या इसके विपरीत पौधे को घर के अन्दर बंद कर दिया जाए तो पौधा फूल नहीं दे सकता। जीवन चिन्गारी तभी जलती है जब मन सभी कार्यो से हट कर अपनी इच्छा शक्ति, कामनाएँ और संकल्प शक्ति को इस प्रकार अभिव्यक्त करें कि प्राण अपने केन्द्र में सक्रिय और उत्तेजित हो जाएं।

अब प्रश्न है कि परमेश्वर की व्यवस्था से प्राण कैसे विभाजित होकर शरीर के हर भाग में पहुँच जाता है? यह व्यवस्था समझने के लिए अपने देश की सरकारी व्यवस्था को देखिए। राष्ट्रपति तो सब जगह जाता नहीं और न ही प्रधानमंत्री, पर उस व्यवस्था के सभी नियम देश की चारों दिशाओं के सभी राज्यों में पहुँच जाते है। गवर्नर और मुख्य मंत्री हर आई. ए.एस. ऑफिसर की ड्यूटी लगा देता है और उसे निश्चित क्षेत्र दे दिया जाता है ठीक वैसे ही प्राणवायु राष्ट्रपति की तरह केन्द्र सरकार की गतिविधियाँ देखती है बुद्धि, कान, आँखें, नाक, जिह्वा और त्वचा की स्वयं देख रेख करता है। अपानवायु, भीतर का कूड़ा कचरा बाहर फेंकता रहता है। यह मुख्य हैं इन दोनों के बिगड़ने से बिगड़ जाता है। उदानवायु स्वयं तन्त्रियों को शक्ति देती है। व्यान वायु खाया पिया हज़म करने में सहायता करती है और समान वायु पचे हुए खाने को सभी अंगो में पहुँचा देती है जैसे टेलीफोन की तारें संदेश देती रहती हैं। वैसे ही हमारी नसें काम करती हैं। शरीर के किसी भाग में चींटी काट जाए मनुष्य को एक क्षण में खबर मिल जाती है आप को कोई नंबर घुमाना नहीं पड़ता, शीघ्र ही सब व्यवस्था हो जाती है। जब तक सृष्टि चलती रहती है मानव का आवागमन चलता रहता हैं चलता ही रहेगा।

प्रभु ने धरती बनाई, परन्तु उसके खण्ड-खण्ड का प्रभाव भिन्न है। कहीं सोना, कहीं चांदी, कहीं लोहा, कहीं पारा, कहीं सोडा, कहीं खार होती है। कोई बर्फीली की, कोई अन्न की, कोई बाग की, कोई चाय-काफी की, कोई पथरीली, कोई मैदानी है असंख्य (खानें) हैं, कोई लवण (नून), कोई नीलम, कोई हीरे पैदा करती है, कहीं नारियल उगते हैं और कहीं आम। कहीं जल है तो उनका प्रभाव भी अलग-अलग। कोई भारी, कोई हल्का, कोई कड़वा, कोई खारा (नमक जैसा) कोई मीठा, कोई तेलिया, किसी से अतिसार (दस्त) किसी से मलावरोध (कब्ज), किसी से ज्वर, किसी से स्वास्थ्य-लाभ होता है। रंग बनाये तो नाम एक, किन्तु रूप एक समान नहीं। पीले रंग को ही लो। आम, सन्तरा, नींबू, हल्दी, केसर, सोना, सूर्यमुखी, गैंदा, अग्नि, सरसों के फूल सभी पीले हैं किन्तु एक से दूसरा नहीं मिलेगा यही दशा दूसरे रंगों की है। स्वाद बनाए तो सब समान नहीं। खटाई को ही देखो! दही, लस्सी, कुल्फा, आम, नींबू जामुना, आँवला, आलूबुखारा, किसी का स्वाद भी दूसरे से नहीं मिलता। करेला कड़वा, बीज पिष्ठ, नीम कड़वा, निम्बोली मीठी, नींबु, खट्टा, बीज कड़वा, पीलू मीठे कड़वा। सन्तरे की बनावट तथा उत्पति देखो। बीज श्वेत, डंडी मटियाली, पत्ते हरे, फूल श्वेत और मनोर सुगन्धवाले, छिलका पीला, फॉके गुलाबी, एक-एक सन्तरे में बाहर डलियाँ और एक-एक फॉक में तीन-तीन बीज, एक-एक सन्तरे में ३६-३६ बीज। अनार की गुँधावट देखो, कैसी बंधी हुई है। एक दाने को निकाल लो तो बड़े से बडा कारीगर वैज्ञानिक भी उसे फिर वहाँ नहीं जमा सकता। गुलाब के फूल में सुगन्धि, परन्तु पत्ते, डंडी और बीज में कुछ भी नहीं। माता के गर्भ में बालक कैसे रहता है और कैसे बढ़ता है? कैसे उसका पालन-पोषण होता है? फिर सि प्रकार गर्भ-गुफा से इतना बड़ा बालक बाहर निकल आता है? मकड़ी अपने ही अंदर से कैसा महीन तार निकालकर किस प्रकार जाल बनाती है। शरीर की आतंरिक लीला भी प्रभु ने कैसी विचित्र रची है। मनुष्य एक पदार्थ को भी अनेक नहीं बना सकता, किन्तु प्रभु की लीला देखो! मनुष्य अन्न खाना चाहता है तो अन्दर जाकर उस अन्न का क्या-क्या बन जाता है फिर रंग भिन्न-भिन्न। हड्डी, पीप, मांस, रूधिर, रस, मज्जा, चरबी, खाल, नख (नाखून) बाल, वीर्य, थूक, खखार आदि।

कार्यालय फौडरी- आमाशय (मेदा) अपने सम्बंधित यन्त्रों सहित एक ऐसा विचित्र कार्यालय है जिसमें भांति-भांति की धातें (धातुएँ) ढ़लती हैं। भट्टी में अग्नि प्रदीप्त करने के लिए धौकनी की भी आवश्यकता है। हमारे दोनों फेफड़े दो ऐसी स्थाई धौकनियाँ है जो दिन-रात अग्नि प्रदीप्त करने के लिए निरन्तर फूक लगाने में व्यस्त रहती है।

मलपात्र और मसाना- यह दो नालें हैं जिनमें ढ़ली हुई धातुओं का मेल तथा इंजन का अनावश्यक जल एकत्रित रहता है। साधारण कार्यालयों में ऐसा जल स्वयंमेव बह-बहकर बाहर निकलता रहता है, किन्तु इस में ऐसे जल और मैल (मल) का निकास कार्यालय के स्वामी की स्वीकृति और आज्ञा पर निर्भर है, इसमें भी प्रभु का एक रहस्य है यदि मनुष्य-शरीर से मल-मूत्र का निकास मनुष्य की इच्छा के आधीन न होता, तो उसका शरीर, वस्त्र बिछौना, लेटने बैठने का स्थान सदैव गन्दा, दुर्गन्धियुक्त और घिनौना रहता बड़े-बड़े विशाल भवनों में मलस्थान (पखाना) प्राय: रहने के कमरों से दूर एक कोने में होता है और समय-समय पर साफ होता है। फिनाइल आदि से उसकी दुर्गन्ध दूर हो जाती है, वर्षा ऋतु में फिर भी दुर्गन्ध रहती है, किन्तु मनुष्य-शरीर में मल सदैव बना रहता है, फिर भी न तो शरीर के स्वामी को ही और न ही किसी आसपास वाले को हि उसे इस आन्तरिक मल की दुर्गन्ध आती है। इस प्रयोजन से प्रभु ने मोमी वस्त्र की एक ३५ फीट लम्बी थैली बना रखी है जिसमें बड़ी दक्षता और चतुराई से इस मल को इस प्रकार लपेट रखा है वर्षो पड़ा रहे, परन्तु दुर्गन्ध बाहर न निकलने पावे। फिर आश्चर्य यह है कि एक फुट वर्गस्थान (आमाशय) में यह ३५ फीट लम्बी थैली ऐसी चतुराई से रखी है कि न बल ही पड़े और न पेंच ही, और रखी भी जाय लपेटकर। माँसाहारी पशुओं के आमाशय में प्राय: न केवल कच्चा

माँस ही वरन् सूक्ष्म माँस से बना हुआ है उस पर पत्थरों के गलाने-वाली इस अग्नि का रत्तीभर भी प्रभाव नहीं पड़ता।

मूर्ति बनाने का कार्यालय- इस कार्यालय में मिला हुआ ही एक दूसरा कार्यालय भी है जहाँ पत्थर काटने और मूर्ति बनाने का काम होता है। इस कार्यालय में पौने दो इन्च लम्बे कमरे में, जिसे बच्चेदानी कहते हैं, बिना किसी कारीगर, यंत्र या शोरो-गुल के चुपचाप ही मनुष्यों तथा पशुओं के बच्चों की नाना रूप तथा आकृति की मूर्तियां बनती हैं। संसार में कोई भी प्राणी श्वास लिए बिना जीवित नहीं रह सकता, परन्तु प्रभु की विचित्र कारीगरी यह है कि गर्भ में बच्चा साँस लिए बिना भी महीनों जीवित रहता है।

तारघर- इसी शरीर में एक बड़ा शानदार तारघर हैं जिसमें सैकड़ों बिजली के तार लगे हुए हैं, जहाँ रात-दिन तार-समाचार बाहर से पहुँचते रहते हैं। उनके पाने के लिए पाँच तार बाबू और एक हैडक्लर्क (मुख्याधिकारी) है जो सबकी पाई खबरे कार्यालय के स्वामी को पहुँचा देता है। यह तारघर शरीर का वह भाग है जिसे खोपड़ी कहते हैं शरीर में सैकड़ो पट्टे बिजली की तारें हैं। पाँच तारबाबू पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ है मस्तिष्क (बुद्धि) उनका मुख्याधिकारी है।

फोटो के कैमरे- उनके साथ ही बड़ा बढ़िया फोटोग्राफी (छाया चित्र) का कार्यालय है जिसमें दो कैमरे (चित्र ग्रहण के यंत्र) उनको शीशे का घेरा १/८ इंच है और उसका व्या (Diameter) १/२४ इंच, किन्तु इतने छोटे शीशों द्वारा भी बड़े-बड़े दरयाओं, पहाड़ों, नगरों, वरन् देश-देशान्तरों के चित्र बड़ी सुन्दरता और सफाई से साथ खींचे जाते हैं और एक ६ इंच वर्ग-कैमरे में एकत्रित कर दिये जाते हैं। फोटोग्राफी का कार्यालय भी मस्तिष्क का ही एक भाग है। इसमें दो कैमरे दोनों आँखें हैं दो शीशे हैं आँखों की दोनों पुतलियाँ। आँखों के डेलीं को बाहरी चोट से सुरक्षित रखने के लिए उस सर्वज्ञ प्यारे प्रभु ने उन्हें दो गहरे गढ़ों में रखा है, गर्द-धूल से बचने के लिए उनके आगे पलकों की चिकें लटका दी हैं और छेदों अर्थात् पपोटों के किवाड़ तथा परदे भी बना दिये हैं जिससे कार्यालय बन्द हो जाने पर उन्हें नीचे गिराकर द्वार सर्वथा बन्द कर दिया जाए। टेलीफोन और फोनोग्राफी- इसी जगह एक और विशाल भवन खड़ा है जिसके दोनों ओर दो बड़े द्वार हैं। उसके एक भाग में टेलीफोन (मुख द्वारा फासले पर बातचीत करने का यंत्र) का सिलसिला बड़े विस्तृत रूप से स्थिर है और दूसरे में फोनोग्राफी का काम जारी है। इसमें दो ही तवें (प्लेटें) सैकड़ों वर्षो तक सुई बदले बिना ही बड़ी सुन्दरता से काम देते रहते हैं। यह भवन भी खोपड़ी में ही है जिसके द्वार दो कान है और कानों के अन्दरवाले परदे दो तवे हैं।

गायनालय- इससे मिला हुआ एक और कार्यालय है जहाँ नाना प्रकार के वाद्य यंत्र (बाजे)- सारंगी, सितार, मृदंगा, तबला, ताऊस, वाणी, बाँसुरी और हारमोनियम बनते और बजते-बजाते रहते हैं। विचित्र बात यह है कि इस कार्यालय में बने हुए सब बाजे एक ही तार से बजते हैं और केवल एक ही चाबी सैकड़ों स्वर निकालने का काम देती है यह कार्यालय शरीर के उस भाग में है जिसे तालु, जिह्वा, कंठ (हलक) कहते हैं और वह एक मात्र वह तार है जिसे धमनी (शिरा, शाहरंग) कहते हैं, और वह एक ही चाबी जिह्वा है।

पिसाई का कार्यालय- इस शरीर में एक आटा पीसने की मशीन (चक्की) लगी हुई है। चक्की चलते समय ओखल में हाथ डालकर माल ऊपर-नीचे करने के काम पर एक चतुर अनुभवी मजदूर लगा हुआ है जो चक्की के धमाधम चलते समय ओखल में बड़ी सफाई के साथ माल फेरता रहता है, किन्तु क्या मजाल जो चक्की हाथ को छू भी जाय ! यह मशीन तालु मुख दोनों होंठ व दाँत है और मजदूर जिह्वा है जो ग्रास चबाते समय ग्रास को दाँतों तले नीचे-ऊपर करते रहने में ही लगी रहती है।

नहर तथा सिंचन-विभाग- इनके अतिरिक्त यहाँ खेती-क्यारी का काम भी होता है, जिसके लिए नहर का एक बड़ा महकमा जारी है, इनमें छोटी-बड़ी सैकड़ों नहरें बहती हैं और देश के प्रत्येक भाग का सिंचन करती है, अर्थात् रक्त से भरी हुई सहस्रों नसे और नाडियाँ, असंख्य रोम अर्थात् शरीर पर के बाल, मानो नाना प्रकार की खेतियाँ हैं।

निर्माण विभाग- यह भाग रात-दिन बनाव-बिगाड़ में लगा रहता है। सैंकड़ों चोट फेट जो बाहर शरीर पर लगाती रहती हैं, वे बिना किसी चिकित्सा के अपने-आप स्वाभाविक रूप से ठीक होते रहते हैं।

चिकित्सालय-इनमें चिकित्सा तथा चीरफाड़ का काम भी निरन्तर होता रहता हैं। सैकड़ों आन्तरिक रोग अपने-आप ही प्राकृतिक रूप से दूर होते रहते हैं और कई आन्तरिक क्षत (जख्म) बिना किसी चिकित्सा के अंदर स्वयमेव भरते रहते हैं।

घंटाहार- इस महान संसार और इसके अंदर नाना प्रकार के असंख्य कार्यालयों के प्रबन्ध को नियम पूर्वक रखने के लिए इसमें एक विशाल घंटाघर भी है, जिसकी मशीनरी बड़ी नियमानुसार चौबीसों घंटे टिक-टिक की ध्वनि करती है ओर लटकल (पैंडुलम) सदैव स्वभावत: हिलता रहता है। यह घंटाघर दिल और उसका नस-नाड़ी (नब्ज) तथा उसकी धड़कन का शब्द टिक-टिक है। लटकन हृदय-यंत्र का लोथड़ा है। यह घड़ी समय बताने के साथ ही सर्दी-गरमी का अनुमान बताने वाले यंत्र 'बेरोमीटर' का काम भी देती है।

सन्तरी- बड़े-बड़े कार्यालयों के दरवाजों पर सन्तरी (सिपाही) भी कन्धे पर बन्दूक रक्ख इधर-उधर, दम लिये बिना टहलता रहता है ठीक इसी प्रकार प्राणवायु यहाँ पहरेदार है जो कभी रूके बिना बरावर अंदर आती और बाहर जाती रहती है यही उसका पहरा है यह कभी किसी को उल्टे मार्ग पर चलकर आगे बढ़ने नहीं देती। उदाहरणरूप से यदि कोई अन्न-कण अथवा जल बिन्दु अपना ठीक मार्ग छोड़कर आमाशय में जाने की जगह फेफड़ों की ओर जाने लगे तो यह उसे धक्का देकर बाहर निकाल देती है जिसे 'धसका लगना' बोलते हैं। अत: उपरोक्त सभी क्रियाओं का कर्ता अवश्यमेव है। वह दो या तीन नहीं हैं। केवल एक ही है, उसी को शास्त्रों में ईश्वर कहते हैं। जो शरीर रहित है जिसका निज् और मुख्य नाम 'ओ३म्' है।

सैनी मोहल्ला, ग्राम शाहबाद मोहम्मदपुर
नई दिल्ली-६१.
मो. : ९८७१६४४१९५

बौद्ध और जैनधर्म का मिथ्या अहिंसावाद

बौद्ध और जैन मतावलम्बियों का मिथ्या अहिंसावाद भारत की अवनति और विनाश का प्रमुख कारण है।

वैदिक साहित्य में अहिंसा का स्थान महत्वपूर्ण है। योगदर्शनकार महर्षि पतंजलि ने यमों में अहिंसा को सर्वप्रथम स्थान प्रदान किया है, क्योंकि अहिंसा की सिद्धि के बिना उपासना सफल नहीं हो सकती। महाभारतकार व्यास ने तो यहाँ तक कह दिया है-

अहिंसा परमो धर्मस्तथाहिंसा परमो दमः।
अहिंसा परमं दानमहिंसा परमं तपः॥-(महा० अनु० ११६/२८)

अहिंसा परम धर्म है, अहिंसा परम संयम है, अहिंसा परम दान है और अहिंसा ही परम तप है।

अहिंसा का अर्थ है-वैरत्याग-मन, वचन और कर्म से किसी भी प्राणी के प्रति वैर की भावना न रखना।

वेद में तो इससे भी ऊंची भावना है। वेद भक्त की तो यह प्रार्थना और कामना रहती है-

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे॥-(यजु० ३६/१८)

मैं संसार के सभी प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखूँ।

परन्तु यहाँ एक बात स्मरण रखने योग्य है। यह तो सामान्य उपदेश है। जिस समय गुण्डे और अत्याचारी अबलाओं पर अत्याचार कर रहे हों, जिस समय बलवान् निर्बलों को पीड़ा दे रहे हों, जिस समय शत्रु हमारे राष्ट्र पर आक्रमण कर रहे हों तब हम क्या करें? क्या आततायी, गुण्डों और शत्रुओं से मार खाते हुए, उनसे पिटते हुए 'अहिंसा परमो धर्म' की दुहाई देते रहें? नहीं , कदापि नहीं।

शत्रुओं से हमारा व्यवहार कैसा हो? वेद का स्पष्ट आदेश है-

उत्तिष्ठत सं नह्याध्वमुदाराः केतुभिः सह।
सर्पा इतरजना रक्षांस्यमित्राननु धावत॥-(अथर्व० ११/१०/१)

अर्थ:-हे वीर योद्धाओ! आप अपने झण्डों को लेकर उठ खड़े होओ और कमर कसकर तैयार हो जाओ। जो सर्पों के समान कुटिल हैं, मानव-समाज के शत्रु हैं, राक्षस हैं, ऐसे शत्रुओं पर धावा बोल दो।

वेद में राजा के लिए आज्ञा है-

इन्द्र जहि पुमांसं यातधानमुत स्त्रियं मायया शाशदानाम्।
विग्रीवासो मूरदेवा ऋदन्तु मा ते दृशन्त्सूर्यमुच्चरन्तम्॥
-(अथर्व० ८/४/२४)

अर्थ:-हे इन्द्र ! देश के शासक, राजा वा नेता ! डाकु, लुटेरे और हिंसकों की गर्दनों को तलवार से काटकर धड़ से अलग कर दे। ऐसे आततायी चाहे वे स्त्रियाँ हों या पुरुष सबके लिए एक ही दण्ड है। दुष्टों के मारने में विलम्ब नहीं करना चाहिये। उनका सफाया इतनी शीघ्र कर देना चाहिये कि वे दूसरे दिन सूर्य का दर्शन न कर सकें।

इसी प्रकार एक अन्य स्थान पर कहा है-

वि न इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः।
अधमं गमया तमो यो अस्माँ अभिदासति॥-(अथर्व० १/२१/२)

अर्थ:-हे इन्द्र! राजन ! सेना लेकर हम पर आक्रमण करने वाले शत्रुओं का नाश कर। हमारे शत्रुओं को नीचा दिखा। जो हमारा विनाश करना चाहता है, उसे घोर अन्धकार में धकेल दे।

इस प्रकार के शतशः वेदमन्त्र उपस्थित किये जा सकते हैं, परन्तु विस्तार भय से अधिक नहीं लिखते।

वेद की इन्हीं भावनाओं और आदेशों के अनुसार महर्षि मनु ने भी कहा है-

नाततायी वधे दोषः॥-(मनु० ८/३५१)

अर्थात् आततायी का वध करने में कोई दोष नहीं है। इतना ही नहीं मनुजी ने तो यहाँ तक लिख दिया है-

आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन्॥-(मनु० ८/३५०)

आततायी को बिना विचारे मार देना चाहिये।

यह है अहिंसा और हिंसा के सम्बन्ध में वैदिक विचारधारा। जो इस विचारधारा पर आचरण करते हैं वे फूलते-फलते हैं, जीवन में सुख पाते हैं और सर्वविध उन्नति करते हैं। इस विचारधारा को न अपनाकर, इसके प्रतिकूल चलने पर हानि उठानी पड़ती है। हमारा प्राचीन इतिहास इस बात का साक्षी है।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने वैदिक हिंसा के आदर्श को सम्मुख रखकर गौ और ब्राह्मण के कल्याण के लिए तथा देश की रक्षार्थ ताड़का का वध किया।मारीच और सुबाहु को मारा और अन्त में रावण का काम भी तमाम कर दिया। परिणाम क्या हुआ - ऋषियों की रक्षा और रामराज्य की स्थापना।

योगेश्वर श्रीकृष्ण ने तो वैदिक हिंसा के आदर्श को सम्मुख रखकर शिशुपाल का वध किया, हयग्रीव और निशुम्भ को नष्ट किया तथा जरासन्ध, कर्ण और दुर्योधन को मरवाया। परिणाम क्या हुआ? भारतवर्ष में सहस्रों वर्षों तक अखण्ड़ चक्रवर्ती साम्राज्य की स्थापना हुई।

अब केवल अहिंसा अपनाने के जो भयंकर दुष्परिणाम हुए उनका भी अवलोकन कर लीजिए। भारतवर्ष में महात्माबुद्ध और वर्धमान महावीर दो ऐसे महापुरुष उत्पन्न हुए जिन्होंने केवल अहिंसा को ही परम धर्म माना। इन दोंनो महापुरुषों ने अहिंसा पर बड़ा बल दिया।दोंनो ही महानुभावों ने युद्ध का घोर विरोध किया।उनका कहना था कि अपनी ही अन्तरात्मा के साथ युद्ध करो, बाहर के युद्ध से क्या लाभ?

उच्चावस्था में पहुँचा हुआ योगी, साधु या महात्मा यदि अपने जीवन में केवल अहिंसा को अपनाए तो जगत् की कोई हानि नहीं। महात्मा बुद्ध और श्री महावीर भी अहिंसा को यदि अपने तक ही सीमित रखते तो देश और जाति की कोई हानि नहीं होती, परन्तु उन्होंने प्रत्येक अवस्था में और प्रत्येक मनुष्य में सामूहिक रुप में अहिंसा की भावना उत्पन्न की, जिसका परिणाम यह हुआ कि करोड़ों क्षत्रीय वीर केवल अहिंसा का आश्रय लेकर बौद्ध भिक्षुक और जैन श्रावक बनकर कायर, डरपोक, भीरु और नपुंसक बन गये।

सन् ६३० में जब प्रसिद्ध चीनी यात्रि ह्वैन्तसांग भारत में आया तो उसने

लिखा कि कप्पिश (काफिरस्तान) सारा बौद्ध हो गया था। लम्पाक और नगर (जलालाबाद) में कुछ हिन्दुओं को छोड़कर शेष सारा काबुल बौद्ध हो गया था। बंगाल और बिहार तो बौद्धों के प्रमुख गढ़ बन गये थे।बंगाल और बिहार में जैन और बौद्ध मत का हिंसा के विरूद्ध इतना प्रचार था कि बंगाल और बिहार के निवासी सेना में भरती नहीं होते थे।इस झूठी अहिंसा का परिणाम यह हुआ कि लोगों के जीवन में शत्रुओं के दमन की, देश, जाति और धर्म की रक्षा की भावना नष्ट हो गयी।परिणामस्वरुप देश परतन्त्र और पराधीन हुआ।

इस्लामी आक्रमण आरम्भ हुए। काबुल जो सारा का सारा बौद्ध बन गया था शत्रुओं के आक्रमण का प्रतिशोध न कर सका।मार खाते हुए, पिटते और पददलित होते हुए सारे बौद्ध मुहम्मदी मत में प्रविष्ट हो गये।

जब मोहम्मद बिन कासिम ने सिन्ध पर आक्रमण कर उसे अपने अधिकार में ले लिया तो वहाँ के बौद्ध भिक्षु धीरे-धीरे मुसलमान बन गये।शिवि (जो अब पाकिस्तान में है और जिसे अब सिबी कहते हैं) पर जब कासिम ने आक्रमण किया तो वहाँ का शूरवीर क्षत्रीय राजा शत्रुओं का मुकाबला करने के लिए किले पर खड़ा हो गया। नागरिकों ने, जो प्रायः बौद्ध और जैन थे, राजा से प्रार्थना की कि युद्ध करना और शत्रुओं को मारना हमारे धर्म के विरुद्ध है। अतः आप युद्ध न करके शत्रु से सन्धि कर लें। जब वीर वत्सराज ने इनका कायरतापूर्ण परामर्श स्वीकार न किया तो इन्होंने शत्रु को सन्देश भेजा कि यदि तुम बौद्धों को न मारने की प्रतिज्ञा करो तो हम नगर का पिछला द्वार खोल देंगे। कासीम ने स्वीकार कर लिया। बौद्ध-भिक्षुओं ने नगर के पिछले द्वार खोल दिये।कासिम सैनिकों सहित नगर में प्रविष्ट हो गया। मुसलमान सैनिकों ने थोड़े से बौद्ध-भिक्षुओं को छोड़कर प्रजा को खूब लूटा। अनेक व्यक्तियों को मौत के घाट उतार दिया और शेष सबको दास बना लिया। - देखिये History of India by C.V. Vaidya

बिहार में बौद्ध-भिक्षुओं के सैकड़ों विहार (मठ) थे, इस कारण उसका नाम ही 'बिहार' पड़ गया। इस प्रान्त में नालन्दा और विक्रमशिला बौद्ध भिक्षुओं के दो विश्वविद्यालय थे। उनमें लाखों हस्तलिखित एवं बहुमूल्य ग्रन्थ थे और यहाँ सहस्रों बौद्ध भिक्षु शिक्षा प्राप्त करते थे। सन् ११९७ में मुहम्मद बिन बख्त्यार खिलजी ने केवल २०० सैनिक लेकर पहले नालन्दा और फिर विक्रमशिला पर आक्रमण किया। बौद्ध भिक्षुओं को जब आक्रमण का पता लगा तो सहस्रों भिक्षु सिर मुँडाकर ,पीले वस्त्र पहनकर, हाथ में माला लिये हुए ,'अहिंसा परमो धर्मः' और 'नमो बुद्धाय'-का जाप करते हुए धर्मान्ध मुसलमानों से प्रार्थना करने लगे कि हम पर दया करो। मुसलमान सैनिकों ने कई सहस्र भिक्षुओं को गाजर-मूली की भाँति काटकर मृत्यु की गोद में सुला दिया।

नालन्दा का हत्याकाण्ड पूर्ण करके ये मुसलमान विक्रमशिला विश्वविद्यालय में पहुंचे। वहाँ भी यही हुआ। वे भिक्षु जप करते रहे और मुसलमान उन्हें तलवार का निशाना बनाते रहे।बौद्ध भिक्षु बिना किसी प्रकार का प्रतिरोध किये सिर झुकाकर कटते रहे। भिक्षुओं को समाप्त कर बख्त्यार खिलजी ने उन दोनों विश्वविद्यालयों की लाखों बहुमूल्य पुस्तकों को जलाकर भस्म कर दिया.-देखिये History of india by Elliot.

यह है भीरुता की पराकाष्ठा! शत्रु आक्रमण कर रहा है और बौद्ध भिक्षु सिर झुकाये मर और कट रहे हैं।यदि ये सहस्रों भिक्षु बिना अस्त्र-शस्त्रों के लात और घूँसों से भी शत्रु पर आक्रमण करते तो २०० मुसलमानों की बोटी भी देखने में नहीं आती।२०० मुसलमानों ने सहस्रों बौद्धों को सदा के लिए भूमि पर सुला दिया। यह है जैन-बौद्धों की झूठी अहिंसा का दुष्परिणाम।

१५ अगस्त १९४७ को भारत स्वतन्त्र हो गया, भारत को लंगड़ी स्वतन्त्रता मिल गयी।भारत को धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित किया गया, परन्तु भारत में मुर्दा बौद्धमत को पुनर्जीवित करने के लिए प्रयत्न आरम्भ हुए। हमारे राष्ट्र-ध्वज में अशोक-चक्र को अपनाया गया। अशोक बौद्ध था, यह तो सर्वविदित ही है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता से विमुख पं० जवाहरलाल नेहरु भारत को अवनति के गढ़े में गिराने के लिए जैन और बौद्धों की झूठी अहिंसा, दया और मैत्रीभाव का अन्धानुकरण जीवन भर करते रहे। चीन का उदाहरण हमारे सामने है।

नेहरुजी नरपिशाच चीनी कम्युनिष्टों के प्रति शान्ति और सद्व्यवहार का बर्ताव करते रहे। इतना ही नहीं शान्ति और मैत्री बनाये रखने के लिए उन्होंने तिब्बत में जो सदा से भारत का अंग रहा है, चीन की प्रभुसत्ता स्वीकार करने तक की भयंकर भूल की। चीन ने धीरे-धीरे हमारी १२,००० वर्गमील भूमि अपने अधिकार में ले ली। नेहरूजी ने वैदिक हिंसा को अपनाकर ऐसे दुष्ट और आततायी का सिर नहीं फोड़ा, अपितु 'शान्ति-शान्ति' ही चिल्लाते रहे। इस शान्ति और सद्भावना का लाभ उठाकर विश्वासघाती चीन ने अक्टूबर सन् १९६२ में भारत पर सशस्त्र आक्रमण कर भारत की २२,००० वर्गमील भूमि हथिया ली। सैकड़ों सैनिक मारे गये।

आज पाकिस्तान आये दिन भारत की सीमाओं पर गोली चलाता है। गोली ही नहीं चलाता वह कच्छ में घुस आया है और अब तो उसने कश्मीर में भी घुसपैठ आरम्भ कर दी है, परन्तु भारत के ये कायर, दब्बू और भीरु शासक केवल विरोध-पत्र भेजकर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं।

अब तो विरोध-पत्रों से पाकिस्तान की अलमारियाँ भर गयी होंगी, और उनके पास भारत के विरोध-पत्रों को रखने की जगह भी नहीं होगी, अतः विरोध-पत्र न भेजकर अब तो कुछ करने की आवश्यकता है। अब तो गोली का उत्तर गोली से ही देने से देश का कल्याण हो सकता है।

यहाँ हम विवेकानन्द जी के शब्दों में यह कहे बिना नहीं रह सकते- अहिंसा परमो धर्मः बौद्ध धर्म का एक बहुत अच्छा सिद्धान्त है,परन्तु अधिकारी का विचार न करके जबरदस्ती राज्य की शक्ति के बल पर उस मत को सर्वसाधारण पर लादकर बौद्ध धर्म ने देश का सर्वनाश कर दिया है।- विवेकानन्द साहित्य, भाग ६ पृ० १४३

जैन और बौद्धों के झूठे अहिंसावाद से देश का सत्यानाश हुआ है, हो रहा है तथा आगे भी होगा, अतः इसे तिलाञ्जलि देकर और वैदिक अहिंसावाद के अपनाने पर ही देश उन्नति के शिखर पर आरुढ़ होगा।

- भूपेश आर्य
मो. : ०८९५४५७२४९१

आर्य समाज सान्ताक्रुज़ का ७२ वाँ वार्षिकोत्सव समारोह

आर्य समाज सान्ताक्रुज़ का ७२ वाँ वार्षिकोत्सव गुरुवार दि. २८ जनवरी से रविवार दि. ३१ जनवरी, २०१६ तक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत् के गणमान्य संन्यासी वृन्द एवं प्रतिष्ठित विद्वान् उपस्थित थे। इस अवसर पर ऋग्वेद के मन्त्रोच्चारण के साथ यज्ञ प्रात: ०८ से ०९.३० बजे तक आयोजित किया गया जिसके ब्रह्मा **डॉ. वसुधा शस्त्री (हैदराबाद)** एवं वेदपाठी पं. नामदेव आर्य, पं. विनोद कुमार शास्त्री, पं. नरेन्द्र शास्त्री, पं. प्रभारंजन पाठक एवं पं. नचिकेता शास्त्री थे। पं. सत्यपाल पथिक भजनोपदेशक के रूप में उपस्थित थे। सायंकालीन सत्र में दि. २८, २९, ३० जनवरी, २०१६ को सुप्रसिद्ध भजनोपदेश पं. सत्यपाल पथिक जी के सुमधुर भजन हुए। इसी सत्र में प्रख्यात वैदिक प्रवक्ता **आचार्य संजीव (मुजफ्फरनगर)** के वेदों एवं आर्ष ग्रंथों के आधार पर सारगर्भित एवं प्रभावोत्पादक प्रवचन हुए।

वार्षिकोत्सव के अवसर पर **'वैदिक पुस्तक मेला'** विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा जिसमें सिर्फ महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थों की प्रदर्शनी एवं उनकी भारी छूट के साथ विक्रि की गयी।

दि. २९ जनवरी को मध्याह्न ३.०० से ५.०० बजे तक **''आर्य महिला सम्मेलन''** श्रीमती उर्मिल बहल की अध्यक्षता में हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती सरोजिनी गोयल उपस्थित थी। इस कार्यक्रम का सफल संचालन श्रीमती सुदक्षिणा शास्त्री (संयोजिका: आर्य महिला समाज सान्ताक्रुज़) ने किया। श्रीमती यशबाला गुप्ता, श्रीमती सुधा कुमार, कौशल्या खुराना आदि अनेक अन्य समाजों की प्रतिनिधि महिलाओं ने महिला सम्मेलन में अपने - अपने विचार व्यक्त किये। आर्य समाज सान्ताक्रुज़ की बहिनों द्वारा सुन्दर सुमधुर भजनों की प्रस्तुति की गयी।

रविवार दि. ३१ जनवरी, २०१६ को प्रात: ८ से ९.३० तक यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न हुई। प्रात:राश के पश्चात १० बजे वार्षिकोत्सव का समापन सत्र प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर श्री योगेश आर्य के सुमधुर भजन हुए तथा डा. वसुधा शास्त्री (हैदराबाद), आचार्य संजीव (मुजफ्फरनगर), डॉ. सोमदेव शास्त्री तथा स्वामी यज्ञमुनि सरस्वती ने अपने प्रेरणादायी प्रवचनों से श्रोताओं को लाभान्वित किया।

प्रधान जी ने सभी उपस्थित विद्वानों, अतिथियों, श्रोताओं एवं कार्यकत्ताओं तथा सहयोगियों एवं दानदाताओं का हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद दिया। मन्त्री श्री रमेश आर्य ने सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन किया। शान्तिपाठ एवं जयघोष के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात सभी ने प्रीति भोज का आनन्द लिया।

हृदय रोग

(क) प्राणायाम- (१) भस्त्रिका प्राणायाम-दोनों नाक से ध्वनि रहित दीर्घ सूक्ष्म धीरे-धीरे लम्बा श्वास पूर्ण लें और दो नाक से वैसे ही लम्बा धीरे-धीरे छोड़ें। समय-१० मिनट। (२) कपालभाति-घड़ी देखकर १ सेकेण्ड में १ बार झटके के साथ श्वास को बाहर फेंकें १ मिनट में ६० बार/उससे कम। समय-३० मिनट। (३) अनुलोम-विलोम-ध्वनि रहित दीर्घ सूक्ष्म धीरे-धीरे लम्बा श्वास पूर्ण लें, और वैसे, ही छोंडें। दायें नाक से लेकर बाये से छोड़े व बाये नाक से लेकर दायें से छोड़ें। समय-३० मिनट।

(४) उज्जायी प्राणायाम- गले का आकुंचन करके श्वास को पूरा अन्दर लेना एवं जालंधर बंध के साथ श्वास को यथाशक्ति रोकना और दाहिने नासिक को बन्द करते हुए बायें नासिका से श्वास को छोड़ना अभ्यास ३ ते ७ बार (५) भ्रामरी-कान, आँख व मुंह को बंद करके, नासिका से श्वास भरकर भ्रमर की तरह गुंजन, ओम के उच्चारण के साथ करना-अभ्यास ३ से ७ बार (६) उद्गीथ- श्वास पूरे भरकर दीर्घ-लम्बा श्वर में ओम का उच्चारण मुंह से करें। अभ्यास ५-११ बार।

(७) प्रणव/ध्यान प्राणायाम-१५ मिनट।

(ख) मुद्रा- अपान वायुमुद्रा, शुन्यमुद्रा (नोट-चलने व भोजन के समय न करें), अपान मुद्रा में प्राणायाम करना लाभकारी रहेगा। समय-१ घंटा। (ग) आसन- (१) सूर्य नमस्कार, (२) मण्डूक आसन (३) शशकासन (४) उत्तानपादासन (५) हलासन ६) नौकासन (७) दीर्घ नौकासन (८) हृदयस्तम्भासन (९) वृक्षासन (१०) कुर्मासन (११) उदर कर्णासन/शंखासन (अपना शरीर के अनुसार कोई भी आसन करें)। (ङ) शवासन (योगनिद्रा)- १० से १५ मिनिट।

(च) सुबह खाली पेट कोई भी एक पीयें- (१) लौकी ५०० ग्राम+पुदीना-७+तुलसी के ७ पत्ते से एक कप जूस/ज्यादा बीमार होने पर शाम को भी पीयें (उच्च रक्तचाप, कोलेस्ट्रोल, अम्लपित्त, पेट रोग, मोटापा में भी लाभ)। नोट- कडुवा लौकी न लें। या (२) अर्जुन के छिलके का चूर्ण ५ से १० ग्राम- एक कप दूध+३ कप पानी को उबालें, एक कप रहने पर छानकर पीयें (यह दुर्बल हृदय रोग में लाभकारी)। या (३) अर्जुन का ताजा छिलका १० से १५ ग्राम २००-३०० ग्राम पानी में मिलाकर उबालें, शेष १/४ या ५० से ७५ ग्राम रहने पर दूध के साथ या बिना दूध के साथ पीयें, या अर्जुन के छिलके का पाउडर भी खा सकते हैं। या (४) मुलेठी+ अर्जुन का छिलका उबालकर (कं. नं. ४ की या बिना दूध के साथ पीयें, (धड़कन, बैचेनी, घबराहट में भी लाभकारी)। या (५) अर्जुन का छिलका १०-१५ ग्राम+गुलाब पत्ता का काढ़ा पानी में उबालकर शेष एक चौथाई रहने पर पीयें (एसिडिटी, अल्सर, कर्मनिद्रा में भी लाभ) (६) कोलेस्ट्रोल- पित्त पापड़ा+नीम का काढ़ा पीयें। नोट- मिट्टी का बर्तन से काढ़ा करें।

(छ) पथ्य-अपथ्य- औषध दर्शन पुस्तक से देखें। पथ्य- सेब आदि फल और सब्जी छिलका के साथ खायें, पतंजलि दिव्य पेय पीयें, लहसुन की कली १ से ३, मौसमी जूस+१ चम्मच शुद्ध शहद (३० दिन तक सुबह खाली पेट्) खायें। बिना तकिया में सोना चाहिए।

(ज) दवा- हृदयामृतवटी, अर्जुनारिष्ट आदि लें।

जल-विच मीन प्यासी

आचार्य प्रियव्रत

अपां मध्ये तस्थिवांस
तृष्णाविदज्जरितारम्।
मृळा सुक्षत्र मृळय ।।४।।

अर्थ- (अपाम्) जलों के **(मध्ये)** बीच में **(तस्थिवांसम्)** खड़े हुए **(जरितारम्)** तेरे भक्त को **(तृष्णा)** प्यास **(अविदत्)** लगी हुई है **(मुळ)** सुखी कीजिए **(सुक्षत्र)** हे विपत्ति से बचानेवाले शक्तिशाली प्रभो! **(मृळय)** मुझे सुखी कीजिए।

हे भगवान्! जलों की अनन्त राशि पड़ी हुई है, परन्तु मैं प्यासा ही मरता हूँ। हे प्रभो! मेरी प्यास कब दूर होगी?

अपने प्रभु की प्राप्ति के लिए सच्ची तड़प से व्याकुल भक्त के हृदय से इसी प्रकार के उद्‌गार निकला करते हैं। यह सारा जगत् उसके लिए खुला पड़ा होता है। अपने रस और महक से साधारण जनों को मस्त कर देनेवाले, धरती माता की छाती पर लगे हुए विस्तीर्ण फलोद्यानों के उत्तमोत्तम फल उसके लिए उपस्थित होते हैं, परन्तु उसे तृप्ति प्राप्त नहीं होती। गङ्गा-यमुना-सी जल की शीतल और स्वादिष्ठ धाराएँ सहस्रों की संख्या में बह रही होती हैं, परन्तु उनसे उसका सन्तोष नहीं होता। धरती पर उगनेवाले भाँति-भाँति के अन्न, उसकी खानों से निकलनेवाले अद्भुत और बहुमूल्य रत्न उसके किसी काम नहीं आते। चन्द्र की शान्तिदायिनी चन्द्रिकाएँ उसे शान्ति नहीं देती। विश्व के असंख्य पदार्थों से मिल सकनेवाले विभिन्न सुख-भोग उसके लिए कोई रस नहीं रखते। इस विश्व के सुख-समुद्र के बीच में खड़ा हुआ भी वह अपने को प्यासा ही पाता है। उसे तो एक बात की लगन लगी है- वह है अपने प्रभु से मिलने की चाह। जब तक उसे उसका प्रभु नहीं मिल जाता तब तक उसे संसार का प्रत्येक भोग फीका प्रतीत होता है। नहीं, वह अपने में फँसाकर उसके ध्यान को प्रभु से अलग खींचना चाहता है, उसके उद्देश्य में रुकावट डालना चाहता है, इसलिए वह सांसारिक भोग उसके लिए विष हैं- वह उनसे परे भागता है। इस प्रकार यह संसार का सुख-समुद्र उसे किसी प्रकार सन्तोष न देकर उलट उसकी विकलता को, उसकी प्यास को बढ़ाने का कारण बनता है। उसे अपने भगवान के दर्शन नहीं हुए, इसलिए वह व्याकुल है, तड़प रहा है। यह संसार उस तड़पन की हालत में उसे और दु:खदायी प्रतीत होता है।

इस संकट से वह कैसे पार होगा, भगवान् ही भक्त को इस विकट विपत्ति से उबार सकते हैं। वे ''सुक्षत्र'' हैं- विपत्तिग्रस्त को विपत्ति से बचा सकते हैं। अपने भक्त की गहरी भक्ति और उसके पवित्र आचरणों से प्रसन्न होकर जब भगवान् उसे अपना दर्शन दे देते हैं तभी भक्त की यह विपत्ति, उसकी यह विकलता की अवस्था दूर होती हैं, तब वह कृतकृत्य हो जाता है, पूर्णकाम हो जाता है। उसके लिए फिर और कुछ अपने भगवान् से बढ़कर प्यारा प्राप्तव्य नहीं रह जाता। अब उसे अपने भगवान् के आनन्दभरे दर्शन प्राप्त हो चुके हैं। अब उसे सर्वत्र भगवान्-ही-भगवान् दीखते हैं। संसार का प्रत्येक पदार्थ और उसका प्रत्येक भोग अब उसे भगवान् के रङ्ग में रङ्गा नज़र आता है- उसे उसमें भगवान् की विभूति झलक रही प्रतीत होती है। वह अब उसे भगवान् के रस से रसीला प्रतीत होने लगता है, इसीलिए वह उसके प्रेम और रुचि का पात्र बन जाता है। अब उसे उसमें एक ऊँचे प्रकार का आनन्द आने लगता है। अब वह उसकी विकलता नहीं बढ़ाता प्रत्युत उसकी शान्ति और सन्तोष का कारण बनता है। अब संसार का छोटे-से-छोटा पदार्थ भी उसकी प्यास बुझा देता है, क्योंकि अब उसे उसमें प्रभु बैठे हुए दीखते हैं। प्रभु के मधुर प्रभाव से अब सारा विश्व मीठा बन गया है। अब उसके सब दु:ख और क्लेश भी कट गये हैं।

हे प्रभो ! मुझमें भी क्या आपके लिए प्यास पैदा हो सकेगी? मैं भी क्या आपके दर्शनों के बिना संसार को फीका समझने लगूँगा? और फिर मुझे क्या आपकी प्राप्ति हो जाने पर यह सारा विश्व आपके रस से रसीला दीखने लगेगा और इस प्रकार मेरे क्लेश कट जाएँगे?

(वरूण की नौका से साभार..)

वेद एवं ज्योतिष सम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सौजन्य से वैदिक मिशन मुम्बई की ओर से दिनांक २६-२७ मार्च २०१६ को **स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती** की अध्यक्षता में आर्य समाज सान्ताक्रुज, मुम्बई में **वेद एवं वेदांग ज्योतिष** विषय पर एक सम्मेलन संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है । जिसमें स्वामी आर्यवेश जी (दिल्ली), स्वामी धर्मानन्द जी (उड़ीसा), स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी (लखनऊ) विशेष अतिथि के रुप में उपस्थित रहेंगे।

ज्योतिष के गणित और फलित दो भेद माने जाते हैं। फलित ज्योतिष के नाम पर नक्षत्र, ग्रह, उपग्रह, मुहूर्त, जन्मकुंडली, मंगल-मंगली-राहुकेतु शुभाशुभादि को लेकर अनेक प्रकार का पाखण्ड और अन्ध विश्वास फैला हुआ है। इसकी यथार्थता से आर्य जन अवगत हो सके इसी दृष्टि से इस सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

कृपया अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं। धन्यवाद!

भवदीय
संदीप आर्य
मंत्री- वैदिक मिशन मुम्बई
मो. ०९९६९०३७८३७

आज की गम्भीर चुनौती
राष्ट्रीय राजनीति कैसी हो (एक झलक)

- पं. उम्मेदसिंह विशारद
मो. 94115 12019

क्या हम प्राचीन शास्त्रों के अनुकूल भारत की राजनीति अपनायें- या-हम वर्तमान राजनीति अपनाते रहें।

आर्य समाज के संस्थापक युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सच्चे राष्ट्र भक्त थे, उन्होंने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के छठवें समुल्लास में मनु स्मृति के अनुसार राजनीति का उल्लेख किया है। ऋषिवर भारत में शुद्ध व सत्य राजनीति और वेदानुकूल आचरण करने वाले नेतृत्व वाले नेता चाहते थे। यही कारण है कि उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में राष्ट्रीय धर्म व स्वराज्य का जोरदार शब्दों में उल्लेख किया है, और भारत में वेदानुकूल धर्म व मनुस्मृति के अनुकूल राजतन्त्र सुचारू रूप से चलता रहे! उसके लिए आर्य समाज खोलकर राष्ट्रीय नीति रीति को उच्च स्थान पर रखा था।

परिणामस्वरूप राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में अस्सी प्रतिशत आर्य वीरों ने अपने गरम-गरम रक्त से भारत माँ का तिलक करके बलिदान दिया था, और आर्य समाज का गौरव बढ़ाया था। आर्यों के बलिदान भारत को स्वतन्त्र कराने में मील के पत्थर साबित हुए थे। आर्य समाज के समक्ष अनेक चुनौतियां होने के कारण वह भारत की राजनीति में पूर्ण सहभागी न बन सका ! और न ही राजनीति का नेतृत्व कर सका।

सत्यार्थ प्रकाश से-

त्रेविद्येभ्यस्त्रयीं विद्या दण्डनीति च शास्वतीम:
आन्वीक्षिकी चात्म विर्धा वार्तारम्भांश्च लोकत:।। (मनु)

अर्थात् विद्या सभा, धर्म और राज्य सभाओं में मूर्खों को कभी भर्ती न करें। किन्तु सदा विद्वान और धार्मिक पुरुषों का स्थापन रखें (राजा) राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री और सभा के सभासद तब हो सकते हैं जब वे चारों वेदों की कर्मोपासना ज्ञान विद्याओं के जानने वालों से तीनों विद्या सनातन दण्डनीति न्याय विद्या आत्मविद्या और परमात्मा के गुण कर्म स्वभाव रुप को यथावत् जानने रुप ब्रह्मविद्या और लोक से वार्ताओं का आरम्भ कहना और पूछना सीख कर सभापति व सभासद हो सकें।

अनुरक्त: मुचिर्दक्ष: स्मृतिमान देशकालिवत:।
बपुष्मान्वीतभीर्वाग्मी दूतो राज: प्रशस्यते।। (मनु.)

अर्थात् विधायक ऐसा हो राज काम में अत्यन्त उत्साह प्राप्तिपूर्वक निष्कपटी पवित्रात्मा चतुर बहुत समय की बात को भी न भूलने वाला, देश और कालानुकूल वर्तमान कर्त्ता सुन्दर रुपयुक्त निर्भय और बड़ा वक्ता हो वही राजा का दूत (विधायक) होने में प्रशस्त है।

यज्ञ धर्मो हव्यधर्मेण सत्य यत्रानृतेन च-।
हयन्ते प्रेक्षमाणांना हतास्तत्र सभासद:। (मनु.)

अर्थात् जिस सभा में अधर्म से धर्म असत्य से सत्य सब सभासदों के देखते हुए मारा जाता है उस सभा में सब मृतक के समान है, जानो उनमे कोई भी नही जीता।

* न्यून से न्यून दस विद्वानों तथा बहुत न्यून हो तो तीन विद्वानों की सभा जैसी व्यवस्था करे उस धर्म अर्थात् व्यवस्था का उल्लंघन कोई भी न करें-॥ (मनु.)
* इस सभा में चारों वेद हैतुक अर्थात् कारण अकारण का ज्ञाता, न्याय शास्त्र निरुक्त धर्मशास्त्र आदि के वेत्ता विद्वान सभासद हों परन्तु वे ब्रह्मचारी गृहस्थ और वानप्रस्थ हो तब यह सभा कि जिसमें दस विद्वानों से न्यून न होने चाहिए! (मनु.)
* जो ब्रहाचर्य, सत्यभाषण आदि व्रत वेद विद्या विचार से रहित जन्ममात्र से शूद्रवत वर्तमान हो उन सैकड़ों मनुष्यों के मिलने से भी सभा नही कहाती। (मनु.)
* प्रधान मंत्री को चाहिए जो पवित्रात्मा, बुद्धिमान, निश्चित बुद्धि पदार्थों के संग्रह करने में अति चतुर सुपरिक्षित मंत्री करे। (मनु.)

यह वैदिक राजनीति की एक झलक प्रस्तुत की है। स्वराज्य प्राप्ति के बाद जो भारत का संविधान बना वह अधिकांश विदेशी राजनीति का संविधान बना। यदि तत्कालीन नेता दूरदर्शी होते तो वेद के विद्वानों की सभा बना के भारत का संविधान बनाने में मदद लेते तो आज की राजनीति की दिशा और दशा दूसरी होती।

आत्म निवेदन

भारत की राजनीति में योग्य, विद्वान व्यक्तियों की अनदेखी होने के कारण, क्षेत्रवाद, जातिवाद, वंशवाद प्रभावशाली व्यक्तित्ववाद प्रभावी है। इसीलिए अवसरवादी, स्वार्थवादी, अनैतिक संस्कार वाले चुनाव टिकट पा करके नेतृत्व में जाते हैं।

भारतवर्ष के प्रान्त-प्रान्तों में राजनीति कॉलेज खुलने चाहिए:-

यदि आर्य समाज नेतृत्व एवं भारत के अन्य विद्वान एक स्वर में भारत सरकार से मांग करें कि भारत की शिक्षा नीति में परिवर्तन करके राजनीति विषय को अलग करके केवल एक विषय राजनीति को प्रान्त-प्रान्त में कॉलेज खोलने की अपील करनी चाहिए इन कॉलेजों में शुद्ध राजनीति की शिक्षा दी जावे और जो उन कॉलेजों से उत्तीर्ण हो उन्हीं को चुनाव लड़ने का टिकट दिया जाय। यदि ऐसा हो जाए तो कालान्तर में भारत की राजनीति में आमूल परिवर्तन आ सकता है।

कॉलेज में प्रविष्टी की शर्त रूप में से कम से कम दसवीं उत्तीर्ण और उससे ऊपर के छात्रों को ही प्रवेश मिलना चाहिए। आज अति आवश्यक है राजनीति में धार्मिक, चरित्रवान, निस्वार्थी, निर्लोभी, दूरदर्शी व सेवाभाव बोल प्रतिक्षित, ग्राम प्रधान से लेकर सर्वोच्च नेतृत्व वालों को ही नामकंन का अधिकार दिया जाए। यह लेख मेरे व्यक्तिगत विचारों की झलक हैं। आर्य समाज को भारत के भविष्य के लिए राजनीति में प्रवेश करना ही चाहिए।

गढ़निवास मोहकमपुर
देहरादून।

महर्षि देव दयानन्द सरस्वती जी प्राचीन श्रेणी के ऋषि के ऋषि बोध अवसर पर

- पं. उम्मेदसिंह विशारद

उन्नीसवीं शताब्दी में भारत में जिन विभूतियों ने जन्म लिया उनमें से ऋषि दयानन्द सरस्वती जी प्राचीन श्रेणी के ऋषियों में आते हैं। देखिये श्रीराम, कृष्ण व अन्य देवी देवता तो अपनी-अपनी ऐषणाओं के खातिर लड़ते रहे और बदले की भावनाओं से संघर्ष करते रहे। क्योंकि वह क्षात्र धर्म का पालन करते हुए अत्याचार व अन्याय के विरुद्ध लड़ाई लड़ते रहे थे। जबकि देवताओं के लिए बदला लेने का विधान नही है। देवता उसे कहते जो अपना स्वार्थ त्याग कर किसी से बदला नहीं लेता, चाहे मृत्यु ही क्यों न आ जावे, परन्तु बदले की भावना से ऊँचा उठा रहता है। सभी देवी देवता पुत्रेषणा, वित्तेषणा, लोकेषणा की भावना से जीवन भर लड़ते रहें।

किन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ऋत सत्य के लिए ही जिये और ऋत: सत्य के लिए दिवगंत हुए। उनका ध्येय तो केवल ऋत सत्य था। वे वास्तविक देवता थे किसी से भी जीवन भर बदले की भावना से कोई कार्य नही किया था। इतिहास गवाह है महर्षि दयानन्द जी के अपने प्राण लेने वालों को बार-बार क्षमा किया था। सतरह बार उनको जहर दिया गया किन्तु वह बार हर बार क्षमा करते रहें। यहाँ तक की अन्तिम बार उनके रसोइये ने षड़यन्त्रकारियों के साथ मिलकर काँच पीस कर दूध में पिला दिया था, जो उनके प्राणान्त का कारण बना। किन्तु देव दयानन्द जी ने उसको कुछ रूपये देकर भाग जाने को कहा। अद्‌भुत देवत्व, ऋषित्व की ऐसी मिसाल इतिहास में देखने का नही मिलता है, इसलिए वह ऋषि थे। जो अपने घातक को भी क्षमा कर गये।

महर्षि दयानन्द जी ने संसार के समाने ऋत सत्य का ज्ञान कराया क्योंकि समाकालीन सुधारक यहाँ तक कि देवी देवता भी सत्य के लिए ही लड़ते थे। सत्य तो देशकाल परिस्थिति के अनुसार बदलता रहता है किन्तु ऋत सत्य कभी नही बदलता है। उन्होंने सत्य ईश्वर का ज्ञान कराया और कहा कि ईश्वर के बनाये हुए पदार्थों के गुण कर्म कभी नही बदलते हैं। जैसे वृक्ष का दिखना तो सत्य है परन्तु वह नाशवान है अपितु उसका बीज ऋत सत्य है। इसी प्रकार संसार का संयोग और वियोग है किन्तु ईश्वर के साथ योगी योग रहता है क्योंकि ईश्वर ऋत सत्य है।

महर्षि ने वेदों की ओर लौटाया:- महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संसार को प्राचीन ऋषियों की श्रेणी के दर्शन कराये और स्वयं आजीवन ऋत सत्य के लिए ही लड़ते रहे। उन्होंने संसार को ईश्वरीय वाणी वेदों की ओर लौटाया। वेदों की शिक्षाओं. को लोग भूल चुके थे। और कहीं-कहीं प्रचलित भी थे तो उनके मंत्र के अर्थ इतिहास परक थे। उन्होंने कहा कि पहले घटना होती है फिर इतिहास होता है इसलिए वेदों के अर्थों में इतिहास नहीं है वेद ही ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि का संविधान हैं। मानव मात्र के कल्याण का मार्ग है। वैदिक धर्म ही मानव मात्र का धर्म है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी निर्भीक थे:- ऋषि दयानन्द जब इस देश के रण क्षेत्र में उत्तरे तब उन्हें चारों तरफ ललकार ही ललकार चैलेन्ज ही चैलेन्ज नजर आये किन्तु उन्होंने सभी सुनौतियों को स्वीकार किया और संसार के कल्याण के मार्ग के लिए रण क्षेत्र में कूद पड़े। एक तरफ दयानंन्द जी थे और एक तरफ सारा संसार था। क्या यह छोटी बात है? अद्‌भुत बात है? इतना साहस ऋत देवता ऋषि में ही हो सकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की देन :- महर्षि दयानन्द जी जिन्होंने सदियों की परम्परा के रुढ़िवाद पर प्रहार किया। महर्षि जी ने कहा जो चला आ रहा है उसकी रक्षा करनी है और पिछली रुढ़ि परम्परा को तोड़ना हमारा धर्म है। प्रत्येक क्षेत्र में रुढ़िवाद के तिलांजलि का नारा लगाया। मानव जगत में एक हलचल मच गई और सुधारवाद चल पड़ा ये काम कोई महर्षि ही कर सकता था।

धार्मिक क्षेत्र में रुढ़िवाद पर प्रहार: - भारत का धर्म वेदों से बन्धा हुआ था किन्तु वेदों के रुढ़ि व इतिहासपरक अर्थ उस समय के विद्वान सायणाचार्य, महिधर, मैक्समूलर आदि ने कहा वेद स्त्रीयों व शूद्रों को नही पढ़ाने चाहिए। वर्ण व्यवस्था जन्म से होनी चाहिए। दलित वर्ग को सदा नीचे रहना चाहिए। काल्पिनिक देवी देवताओं कि मूर्ति पूजा करनी चाहिए। क्योंकि ये वेदों में लिखा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने इन सभी मान्यताओं को एक सिरे से नकार दिया और सबसे पहला प्रहार वेदों के रुढ़ि अर्थ पर किया। उन्होंने निरूक्त शास्त्र के अनुसार वेदों के यौगिक अर्थ किये और एक ईश्वर की पूजा करना बताया। उन्होंने प्राचीन ऋषि परम्परा अर्थात् एक ईश्वर की पूजा का मार्ग बताया।

सामाजिक क्षेत्र रुढ़िवाद पर प्रहार:- महर्षि दयानन्द जी का दृष्टिकोण सर्वथा मौलिक था। वे भूत, भविष्य और वर्तमान को मिलाकर चलना चाहते थे। स्त्री शिक्षा चलाना बाल विवाह रोकना, सती प्रथा बन्द करना, दहेज प्रथा रोकना, जाति-पाति छुआछूत रोकना था। अनेक सामाजिक बुराईयों के प्रति आवाज उठाई। उन्नीसवीं शताब्दी में महर्षि को अपार सफलता प्राप्त हुई जो आगे चलकर मील का पत्थर साबित हुई। ये ऋत ऋषि ही कर सकता था।

राजनैतिक क्षेत्र पर प्रहार:- उनका राजनैतिक सुधार रुढ़िवाद का उन्मूलन करना था। उनका मानना था। कि भारत के राजनीति में वेदानुकूल धार्मिक व्यवस्था नेतृत्व केवल धार्मिक व्यक्तियों के हाथ में होना चाहिए। तथा भारत की दुर्दशा का कारण अदूरदर्शी राजनीति व आयोग्य नेतृत्व का होना है। वे चाहते थे सम्पूर्ण भारत में वेदानुसार राजतन्त्र स्थापित।

वेदों की रक्षा करना व प्राचीन संस्कृति व संस्कारों को बचाना:- महर्षि जी ने कहा आज जो समाजवाद का नारा लग रहा है वह सबके हित में नही हैं। तथा सत्य पर आधारित नही है। वेदों की शिक्षा से ही प्राचीन संस्कृति व संस्कार बच सकते हैं। ऋषि दयानन्द और समाज सुधारकों में भेद यह है दूसरों ने हिन्दू धर्म, को खत्म करने का प्रयत्न किया आनन्द ने उन्हें हिन्दू रहते हुए नवीनता के रंग में रंग दिया। उन्होंने हिन्दू धर्म में रूढ़िवाद की काया पटल दी यही कारण है बीसवीं सदी में कार्य कि वे महर्षि दयानन्द जी के रूपरेखा पर कार्य किया।

कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की:- उस युग में समाज में आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक व्यवस्थाओं पर प्रहार

करना व सत्य असत्य, धर्म अधर्म, आर्ष अनार्ष आदि का भेद प्राचीन ऋषियों की परम्परा वाला ऋषि ही कर सकता था। सत्यार्थ प्रकाश ने संसार को नई वैचारिक क्रान्ति देकर झकजोर कर रख दिया।

आर्य समाज की स्थापना:- उस युग में आर्य समाज की स्थापना अर्थात् श्रेष्ठ पुरुषों का संगठन करना व उनके द्वारा समाज की तमाम बुराईयों के खिलाफ सदैव चैलेंज रुप में स्वीकार करना, राष्ट्र धर्म को सर्वोपरि रखना तथा आर्य समाज के दस नियम सम्पूर्ण मानव मात्र के लिए वेदों की रक्षा करना। यज्ञ, स्वध्याय तथा साम्यवाद का नारा आर्य समाज द्वारा दिया जाता रहे इसके लिए आर्य समाज खोली। इतना बड़ा कार्य को प्राचीन शैली का ऋषि ही कर सकता था। इसीलिए मैं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को प्राचीन शैली का ऋषि मानता हूँ और उनको सदा नमन करता हूँ।

गढ़ निवास-मोहकमपुर
देहरादून उत्तराखण्ड।
मो. - ९४११५१२०१९

'वे' स्वामी दयानंद आर्य समाजी नहीं थें!

भारतीय जनतंत्रदिवस २०१६ की पूर्व संध्या पर भारत सरकार की ओर से विभिन्न क्षेत्रों में विशेष कार्य करनेवाले महानुभावों के लिए 'पद्म' पुरस्कार घोषित किए गए। जिनमें एक नाम स्वामी दयानंद था जिन्हें मरणोपरान्त 'पद्मभूषण' पुरस्कार से गौरवान्वित किया गया। अनेक अग्रगण्य समाचार पत्रों में इस नाम के साथ आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती की फोटो छपी, जिसके कारण समाज में भ्रम फैला, जिसका निराकारण करना हम अपना कर्तव्य समझते हैं।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती (कार्यकाल १८२४ से १८८३) के लिए 'भारत रत्न' या अन्य किसी भी पुरस्कार की माँग न सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, हनुमान रोड नई दिल्ली. इस शिखर संस्था ने की, न ही महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा- नांदेड की/म.आ.प्र. सभा के प्रधान डॉ. ब्रह्ममुनीजी से इस विषय पर फोन पर चर्चा हुई, उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि - वे पुरस्कार प्राप्त दयानंद, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती नहीं है।

''आर्य समाज (स्थापना १८७५) के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती, कपिल-कणाद जैसे आधुनिक कालीन ऋषि थें, वे सामाजिक मान सम्मान, लौकिक यशापशय, के बारे में सर्वथा निरीच्छ एवं अलिप्त थे। महर्षि दयानंद महाराष्ट्र के लोकमान्य नेता महात्मा फुले, लोकहितवादी गोपाल हरी देशमुख, न्यायमुर्ति महादेव गोविंद रानडे प्रभृति के समकालीन एवं समविचारी थें। भारत-रत्न अथवा तत्सम किसी पुरस्कार से भी 'स्वामी' एवं 'महर्षि' यह नामाभिधान हमारे लिए श्रेष्ठ है। कोई सरकारी पुरस्कार देकर इस पाखंड खण्डिनी पताका फहरानेवाले बाल ब्रह्मचारी का अवमूल्यन ना करे''- आर्य समाज नांदेड के कार्यकर्ता प्राचार्य देवदत्त तुंगार, डॉ. शारदा तुंगार, पं. नारायणराव कुलकर्णी, श्रीमती मारंपल्ले, प्रा. विनायक तांदले, श्री यादव भांगे, श्री सत्येंद्र आर्य आदि द्वारा एक परिपत्रक प्रकाशित करते हुए अपनी भावना एवं सरकार के प्रति प्रार्थना प्रकट की है।

डॉ. शारदा देवदत्त तुंगार
प्रधाना-आर्य समाज नांदेड.

''रहीमन - सीख''

* सच्चा मित्र केवल वही है, जो विपत्ति में काम आता हैं।
* दुष्ट आदमियों की संगत से सज्जनों को कष्ट उठाना पड़ता है।
* अपना मतलब निकल जाने के बाद मनुष्य का व्यवहार बदल जाता है।
* दूसरे व्यक्ति के घर जाने पर अपनी महानता घट ही जाती है।
* कड़बे मुख वालों को दंड मिलना उचित ही है। (कड़बे रवीरे का सिर काटा जाता है।)
* छोटे मनुष्य के उपद्रवी स्वभाव के सामने बड़े मनुष्य को क्षमाशील होना चाहिए।
* यह बात हमें अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि छोटों से ही बड़ों की शोभा होती है।
* बुरे समय के आने पर मित्र भी शत्रु बन जाते हैं।
* हमें अपने शरीर को प्रत्येक स्थिति (सर्दी, गर्मी या वर्षा) का सामना करने के लिए सक्षम बनाना चाहिए। बुरे स्वभाव वाला मनुष्य अच्छे स्वभाव वाले मनुष्य का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता।
* तुच्छ व्यक्ति धन-सम्पत्ति प्राप्त कर घमंडी बन जाता है।
* यदि प्रेमी सौ बार भी रुठे तो भी उसे मनाना चाहिए।
* सज्जन मनुष्य परोपकार के लिए ही अपनी सम्पत्ति को जोड़ता है।

संकलन कर्ता
प्रो. क्रान्ति कुमार

विचार शक्ति का चमत्कार

(बुद्धि है तो सबकुछ है)

बुद्धि संसार का सर्वश्रेष्ठ तत्व है। इस बुद्धि में अपार शक्तियाँ समाई हुई है जो कि विचार शक्ति के रुप में इसमें विद्यमान रहती है। हमारे शरीर में कई शक्तियों कार्य करती रहती हैं जैसे प्राण शक्ति, शारीरिक शक्ति, विश्वास की शक्ति, भावनाओं की शक्ति इत्यादि और यह सारी शक्तियों विचार शक्ति से संचालित होती है। इसके कई आयाम हैं जो कि निम्न प्रकार से हैं।

१) हमें अपने विचारों का बारीकी से अवलोकन करना चाहिए कि कही अच्छे विचारो के साथ साथ नकारात्मक विचार तो घेर नही रहे।

२) हमारे सारे कार्य या प्रयोग विचारो को सुदृढ़ बनाने और उन किसी एक दिशा में प्रवाहित करने में किये जाते हैं। विचार सही हैं तो सब सही है। अच्छे विचारों से हमारा जीवन स्वत: उन्नत बनता चला जाता है।

३) जिस दिशा में हमारे विचार प्रवाहित होते हैं उसी दिशा में हमारा जीवन भी प्रवाहित होते रहते हैं। विचारों का स्थिर होना या अच्छाईयों में बदलाव होना बहुत जरूरी है। कम से कम चित्त के पुण्यों को क्षीण होने से तो हम बचा ही सकते हैं। यह एक प्रकार का छिद्र है जिसमें से सारे हमारे अच्छे विचार बाहर प्रवाहित हो जाते हैं। और फिर विचारों को उर्ध्वगामी होना शुरु हो सकता है।

४) हमारे सारे जीवन को क्रोध, अहंकार, ईर्ष्या, बदले की भावना , बुराई करना दूसरों को कोसना बहुत हद तक प्रभावित करता रहता है। यह सब हमारे जीवन में अवरोध का कार्यकरते हैं और हमारा जीवन एक साधारण जीवन बनकर रह जाता है। अच्छाईयों में स्थित विचारों के प्रति गंभीर कहना, इसमें ही समस्त जीवन का सार छुपा है।

५) उपर्लिखित विचारों को स्वीकार करने में ही जीवन का मूलमंत्र छुपा है। अस्वीकार की भावना में आरम्भ होता है व भय की पराकाष्ठा पर पहुँचकर संतोष पा जाकर समापन होता है। कहने का मतलब यह है कि जबतक हमभय रहित होकर स्व अपने आप का सामना नहीं कर पाएगे तबतक विचार शक्ति पूर्ण रुप से कार्य नही कर पाएगी।

- राजकुमार भगवतीप्रसाद गुप्त, मंत्री आर्य समाज, वाशी

वेद मार्ग पर चलो

जगदीशचन्द कसेरा

संसार मे चलते हुये मनुष्य के सामने विविध मार्ग उपस्थित हो जाते हैं। एक यात्री यात्रा करता हुआ चौराहे पर पहुँच जाय तो उसके सामने एक समस्या उपस्थित हो जाती है कि किस मार्ग पर गमन किया जाय? आज संसार में नाना प्रकार के वाद चले हुये हैं और अनेक मार्ग दिखाई देते हैं। इन वादों और मार्गो ''को देखकर हमारे सामने एक बहुत बड़ा सवाल खडा हो जाता है कि हम कौन मार्ग पर चलें?''

प्रमुख मार्ग दो हैं। एक मार्ग भौतिकवाद, नास्तिकता और राक्षसी प्रवृत्ति का है। दूसरे शब्दो में उसे वाम मार्ग, चारवाकों का मार्ग भी कह सकते है। इस मार्ग का आदर्श है यावज्जीवेत् सुखं जीवेत ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्।

भस्मी तृतस्य देहस्य पुनरागमनं कुत:।।

जब तक जियो सुख से जियो, ऋण लेकर घी का पान करी क्यो कि मरने के बाद फिर जन्म नही होता अत: खाओ पियो, मौज उडाओ। खूब भोगों का भोग करो। यही लोक है, परलोक आदि कुछ नही है। राक्षसी मार्ग भी यही है। रावण ने सीता जी से यही तो कहा था-

भुङ्क्ष्व भोगान् यथाकार्म पिब भीरू रमस्व च।। (वा. रा. सु. २४/२४)

सीते! इच्छानुसार भोगो को भोग। खा, पी. और मोज कर। आज का पाश्चात्य ससांर भी इसी मार्ग पर चल रहा है। उन्होंने भी Eat, drink and be merry- खाओ, पियो करो आनन्द, भाड़ मे जाय परमानन्द का मार्ग अपनाया हुआ है। इसी मार्ग का परिणाम बहुत भंयकर है। पतन की ओर ले जाने वाला है, गढ़े में गिराने वाला है। इस मार्ग पर मत चलो।। यदि कल्याण चाहते ही तो पूर्वजो के वैदिक मार्ग पर चले। उन्हीं का अनुकरण और अनुसरण करो। मनु महाराज का आदेश है- येनास्य पितरो माता येने याता: पितामहा:।

तेन यायात्सतां मार्ग तेन गच्छन्न रिष्य ते।। (मनु. ४ /१७९/

जिस मार्ग पर बाप-दादा-चले हो, उसी श्रेष्ठ मार्ग पर गमन करना चाहिये! सत्पुरुषों के मार्ग पर चलते से मनुष्य का पतन नहीं होता है।

हमारे पूर्वजों का मार्ग था, नास्तिकता का नही आस्तिकता का मार्ग था। हमारे पूर्वजो का मार्ग सदाचार और श्रेष्ठाचार का मार्ग था। इस मार्ग पर चलते हुये ही तो महाराज अश्वपति ने घोषणा पूर्वक कहा था कि मेरे राज्य में कोई ऐसा व्यक्ति नही है जो हवन न करता हो, कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो कंजूस, कोई व्यभिचारी पुरुष नहीं है, फिर मला स्त्री तो हो ही केसे सकती है। वेद का आदर्श है-

जीवास्थ जीव्यासम्। (अ. १९/६९११) स्यम जियो और दूसरो को जीने दो।

Live and Let others Live.

आज विश्व अशान्त है चारो और आंतकवादियो का हाहाकार है विश्व युद्ध सिर पर मंडरा रहा है चारो और नगां नाच हो रहा है। यह सब कुछ किसलिए है कि हम अपने पूर्वजो के मार्ग से भटक गये है। यह अशान्ति, अन्याय अनाचार, अनैतिकता ओर भ्रष्टाचार पूर्वजों के मार्ग पर चलने से ही दूर हो सकता है। वाम मार्ग को छोडकर वेद मार्ग पर चलो। इसी मार्ग पर चलने से कल्याण है आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने विश्व को वेदों की ओर लौटो और वेद मार्ग पर चलने का जो सन्देश दिया व इतिहास के पन्नो में स्वर्ण अक्षरों मे लिखने योग्य है। श्री विरजानन्द जी श्री श्रद्धानन्द, प. लेखराम जी व अन्य वेदिक विद्धानो ने सम्पूर्ण जगत् को आर्य बनाने का सपना सजोया था उसी सपनो को हमे पूरा करना है।

कल्पेश यादव- 9869315785

हमारे पास रहता है हमें मालूम ही नहीं
हमारे साथ रहता है- हमें मालूम ही नहीं

सूरज बनके आता है- किरन से रंग बिखराता है
फूलों में मुस्काता है- घटा से जल बरसाता है
हवा के साथ बहता है- हमें मालूम ही नहीं.

सांस के साथ मिलता है- लहू के संग घुलता है
नज़र के संग चलता है- धडकनों मे मचलता है
निरंतर ओज भरता है- हमें मालूम ही नहीं...

ज्ञान की लौ जलाता है- कर्म से वा मिलाता है
कर्म फल का वो दाता है- सभी से उसका नाता है
सदा वो न्याय करता है- हमें मालूम ही नहीं

आसमानों से ऊँचा है- सुमंदर से भी गहरा है
सभी को खुद में रखता है- सभी के अंदर ठहरा है
वही कण-कण को रचता है- हमें मालूम ही नहीं...

माणिकराव भोसले गौरव स्थिर निधि के लिए आवाहन

समाज तथा देश को खंडित करने वाली जातिप्रथा को तोड़कर विवाह करने की प्रेरणा देने के लिए लातूर (महाराष्ट्र) के श्री माणिकराव भोसले ने १९७० में अपने दो साथियों - श्री सांबाप्पा राऊत तथा स्व. रामस्वरूप लोखंडे- के साथ मिलकर आर्य समाज रेणापुर के अन्तर्गत 'अन्तर्जातीय विवाह मंडल रेणापुर' की स्थापना की। विगत ४५ वर्षों में इस मंडल के माध्यम से इन्होंने ४०० विवाह निश्चित किए हैं। मंडल के संस्थापक अध्यक्ष के रूप में इन्होंने अनेकानेक आर्थिक कठिनाइयों को झेलते हुए अपना पूरा जीवन ही इस कार्य में लगा दिया है। आयु के ९२ वें वर्ष में भी वे अपना यह कार्य पूरी निष्ठा व लगन से कर रहे हैं। इसी कार्य को ध्यान में रखकर २०१२ में दिल्ली में हुए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में इनको अभिनन्दन पत्र देकर सत्कार किया गया।

मंडल के संस्थापक के साथ माणिकराव जी 'आर्य समाज रामनगर, लातूर' के भी संस्थापक हैं। इन्होंने इस समाज का कोषाध्यक्षपद १६ वर्ष संभाला है। महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग में ये वर्षों से सदस्य के रूप में कार्य कर रहे हैं। ऐसे सेवाभावी, निष्ठावान, लगनशील, कर्मठ व परोपकारी आर्य सेवक के गौरवार्थ

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा उनके नाम से पाँच लाख की स्थिर निधि स्थापन कर रही है। श्री माणिकराव जी की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने से इस निधि का व्याज उन्हें आजीव मिलता रहेगा तथा उनके उपरान्त यह व्याज वेदप्रचार के लिए सभा को मिलेगा, ऐसा निर्णय सभा ने किया है।

अत: आर्यजगत् के दानशूर महानुभावों से सानुरोध विनंती है कि वे स्वयं तथा अपने समाज, संस्था की ओर से इस स्थिर निधि के लिए अधिकाधिक सहायता राशि देकर अपना धन सत्कार्य में लगाकर पुण्य के भागी बनें। धनराशि का चेक या ड्राफ्ट ''ज्येष्ठ आर्य सेवक गौरव समिति'' के नाम से बनवाकर वह 'मंत्री, आर्यसमाज रामनगर, औसा रोड, लातूर (महाराष्ट्र) ४१३५३१' के पते पर भेजकर रसीद प्राप्त करें। ड्राफ्ट परळी (जि. बीड-महाराष्ट्र) के किसी भी बैंक की किसी भी शाखा का बनवा सकते हैं। निवेदक- सचिव, अन्तर्जातीय विवाह मंडल रेणापुर, संपर्ककार्यालय-सिताराम नगर, लातूर (महाराष्ट्र) ४१३५३१

आर्यसमाज के नियम (बम्बई)

चैत्र शुक्ला ५ शनिवार संवत् १६३२ एवं १० अप्रैल सन् १८७५ एवं (खाउल् अम्बल सन् १२६२ हिजरी, एवं शाके शालिवाहन १७६७, फसली सन् १२८३, एवं खुदोद सन् १२८४ पारसी) को गिरगाम रोड़ में प्रार्थना-समाज के मन्दिर के निकट डाक्टर माणिक जी की बागबाड़ी में सायंकाल के ५॥ बजे एक सभा की गई। जिसमें आर्यसमाज स्थापित किया गया और निम्मलिखित नियम स्वीकार किये गये-

१) आर्य समाज का सब मनुष्यों के हितार्थ होना आवश्यक है।

२) इस समाज में मुख्य स्वत: प्रमाण वेदों का ही माना जायेगा। साक्षी के लिये वेदों के ज्ञान के लिये तथा आर्य इतिहास के लिये शतपथादि चार ब्राह्मण, छ: वेदांग, चार उपवेद, छ: दर्शन, ग्यारह सौ सत्ताईस वेदों की शाखा वेदव्याख्यान आर्ष सनातन संस्कृत ग्रन्थों का भी वेदानुकूल होने से गौण प्रमाण माना जायेगा।

३) इस समाज में प्रतिदेश के मध्य एक प्रधान समाज होगा और अन्य समाज शाखा प्रशाखा होंगे।

४) अन्य सब समाजों की व्यवस्था प्रधान समाज के अनुकूल रहेगी।

५) प्रधान समाज में वेदोक्तानुकूल संस्कृत और आर्य भाषा में नाना प्रकार के सदुपदेश के पुस्तक होंगे और आर्य प्रकाश पत्र यथानुकूल आठ-आठ दिन में निकलेगा। यह सब समाजों में प्रवृत्त किये जायेंगे।

६) हर एक समाज में प्रधान पुरुष और दूसरे मन्त्री तथा अन्य पुरूष और स्त्री सभासद होंगे।

७) प्रधान पुरुष इस समाज की यथावत् व्यवस्था पालन करेगा और मन्त्री सबके पत्रों का उत्तर और सब के नाम व्यवस्था लेख करेगा।

८) इस समाज में सत्पुरुष, सत्यनीति सत्याचरणी हितकारक समास्थ लिये जायेंगे।

९) जो गृहस्थ गृहकृत्य से अवकाश प्राप्त हो, सो जैसा घर के कामों में पुरूषार्थ करता है, उसके अधिक पुरुषार्थ इस समाज की उन्नति के लिये करे और विरक्त तो नित्य ही इस समाज की उन्नति करे, अन्यथा नहीं।

१०) हर आठवे दिन प्रधान मन्त्री और सभासद् समाज-स्थान में इकट्ठे हों और सब कामों में इस काम को मुख्य जानें।

११)इकट्ठे होकर सर्वथा स्थिर चित्त हो, परस्पर प्रीति से पक्षपात, छोड़कर प्रश्नोतर करें, फिर सामवेदादि गान, परमेश्वर, सत्य-धर्म सत्यनीति, तथा सत्योपदेश के सम्बन्ध में बाजा आदि के साथ हो। और इसी विषय पर मन्त्रों का अर्थ और व्याख्यान और फिर गान हो, इत्यादि।

१२) हर एक सभासद् न्यायपूर्वक पुरुषार्थ से जितना धन प्राप्त करे, उसमें से आर्यसमाज, आर्य विद्यालय और आर्य-प्रकाश, पत्र के प्रचार और उन्नति के लिए, आर्य समाज के धन कोष में एक प्रतिशत प्रीति पूर्वक देये से अधिक धर्मफल। इस धन का इन ही विषयों में व्यय होवे, और जगह नहीं।

१३) जो मनुष्य इन कार्यों की उन्नति और प्रचार के लिये, जितना प्रयत्न करे, उसके उत्साह के लिये यथायोग्य सत्कार होना चाहिये।

१४) इस समाज में वेदोक्त प्रकार से हर एक स्तुति प्रार्थना और उपासना अद्वितीय परमेश्वर की ही करने में आयेगी। अर्थात् निराकार, सर्वशक्तिमान् न्यायकारी, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, दयालु, सर्वजगन्माता, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सच्चिदानन्द आदि लक्षण युक्त, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य शुद्ध, बुद्ध, मुक्तस्वभाव, अनन्तसुखप्रद, धर्मार्थकाममोक्षप्रद, इत्यादि विशेषणों से परमात्मा की ही स्तुति, उसका कीर्तन, प्रार्थना उससे सर्वश्रेष्ठ कार्यों में सहाय चाहना उपासना उसके आनन्द स्वरूप में मग्न हो जाना। सो पूर्वोक्त निराकारादि लक्षण वाले की ही भक्ति करनी, उसके सिवाय और की कभी नहीं करनी।

१५) इस समाज में निषेकादि अन्त्येष्टि पर्य्यन्त संस्कार वेदोक्त किये जायेंगे।

१६) आर्य विद्यालय में वेदादि सनातन आर्य-ग्रन्थों का पठन-पाठन कराया जायेगा और वेदोक्त रीति से ही सत्यशिक्षा सब पुरुष और स्त्री के सुधार की होगी।

१७) इस समाज में स्वदेश के हितार्थ दो प्रकार की शुद्धि के लिये प्रयत्न किया जायेगा। एक परमार्थ दूसरी लोक व्यवहार। इन दोनों का शोधन और शुद्धता की उन्नति तथा सब संसार के हित की उन्नति की जायेगी।

१८) इस समाज में न्याय वही माना जायेगा, जो पक्षपात रहित अर्थात् प्रत्यक्षादि प्रमाणों से परीक्षित सत्य-धर्म वेदोक्त होगा। इससे विपरीत को यथाशक्ति न माना जायेगा।

१९) इस समाज की ओर से श्रेष्ठ विद्वान् सर्वत्र सदुपदेश करने के लिये समयानुकूल भेजे जायेंगे।

२०) स्त्री और पुरुष दोनों के विद्याभ्यास के लिये स्थान हर एक स्थान में यथाशक्ति अलग-अलग बनाये जायेंगे। स्त्रियों के लिये अध्यापन और सेवा प्रबन्ध स्त्रियों द्वारा ही किया जायेगा और पुरुष पाठशालाओं का पुरुषों द्वारा, इसके विरूद्ध नहीं।

२१) उन पाठशालाओं की व्यवस्था प्रधान आर्यसमाज के अनुकूल पालन की जायेगी।

२२) इस समाज में प्रधान आदि सभासद् परस्पर प्रीति के लिये अभिमान, हठ, दुराग्रह और कोषादि सब दुर्गुण छोड़कर उपकार, सुहृदयता से सब से सब को निर्वैर होकर स्वात्मवत् प्रीति करनी होगी।

२३) विचार समय सब व्यवहारों में न्याय युक्त सर्वहित की जो सत्य बात भले प्रकार विचार से ठहरे, वही सब सभासदों को प्रकट करके मानी जाये। इसके विरूद्ध न मानी जाये। इसी का नाम पक्षपात छोड़ना है।

२४) जो पुरुष इन नियमों में अनुकूल आचरण करने वाला धर्मात्मा सद्गुणी हो, उसको उत्तम समाज में प्रविष्ट करना, उसके विपरीत को साधारण समाज में रखना, और अत्यन्त प्रत्यक्ष दुष्ट को समाज से निकाल ही देना, परन्तु वह काम पक्षपात से नहीं करना, बल्कि यह दोनों बातें श्रेष्ठ सभासदों के ही विचार से की जायें अन्य प्रकार नहीं।

२५) आर्यसमाज, आर्य विद्यालय, 'आर्य-प्रकाश' पत्र और आर्यसमाज का अर्थ, धन कोष इन चारों की रक्षा और उन्नति प्रधानादि सब सभासद् तन, मन और धन से सदा करें।

२६) जब तक नौकरी करने और कराने वाला आर्य समाजस्थ मिले, तब तक और की नौकरी न करे और न किसी और को नौकर रखें, वे दोनों स्वामी सेवक भाव से यथावत् वरतें।

२७) जब विवाह, पुत्र जन्म, महालाभ, वा मरण वा कोई समय दान व धन व्यय करने का हो, तब आर्यसमाज के निमित्त धन आदि दान किया करें। ऐसा धर्म का काम और कोई नहीं है, इस निश्चय को जानकर इसको कभी न भूलें।

२८) इन नियमों में कोई नियम नया लिखा जायेगा वा कोई निकला जायेगा या न्यूनाधिक किया जायेगा, सो सब श्रेष्ठ सभासदों की विचार रीति से श्रेष्ठ सभासदों को विदित करके ही यथायोग्य करना होगा।

इसके पश्चात् आर्यसमाज के पदाधिकारी नियम किये गये और प्रति शनिवार को सायंकाल आर्यसमाज के साप्ताहिक अधिवेशन होने निश्चित हुए परन्तु पीछे शनिवार का दिन सभासदों के अनुकूल न पड़ा, अत: आदित्यवार निश्चित गया।

नूतन निष्काम पत्रिका वर्ष-७ अंक-२ मुम्बई फरवरी - २०१६ | पृष्ठ-१६ | मूल्य- रु. ९/-

माघ २०७१ (२०१६) | Post Date : 25-2-2016 | MCN/136/2016-2018 MAHRIL 06007/31/12/2015-TC | पोष्ट आफिस : सांताक्रुज़ (प.)

आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई का मुखपत्र

संपादक : संगीत आर्य

मुद्रक एवं प्रकाशक : चन्द्रपाल गुप्त द्वारा कृष्ण प्रिंटिंग प्रेस, १६, मंगलदास रोड, मुंबई-२. से मुद्रित कराकर आर्य समाज भवन, जी. पी. रोड, (लिंकिंग रोड़), सान्ताक्रुज़ (प.) मुंबई-४०० ०५४. से प्रकाशित किया। दूरभाष : २६६० २८००/२६६०२०७५

प्रति, _____

_____

_____

टिकट

जवानों तुम्हारी जवानी कहाँ है?

जवानों तुम्हारी जवानी कहाँ है?
मुरझाया चेहरा रवानी कहाँ है?
ब्रह्मचर्य का पालन करते नही है।
मातापिता से अब डरते नहीं है॥
पितृ -भक्त श्रवण अब कौन बनेगा?।
धर्म की रक्षा हेतु अब कौन मिटेगा?॥
भगत सिंह की अब निशानी कहाँ है?
मुरझाया चेहरा, रवानी कहाँ है?
ज्ञान की गंगा कौन बहायेगा?।
घर घर में जाकर हवन कौन करायेगा?॥
नेता सुभाष की जवानी कहाँ है?
मुरझाया चेहरा रवानी कहाँ है?'
मंगल पाण्डे बनकर जगत को दिखा दो।
ज्ञान के सुमनों से भुवन को सजा दो।
कश्मीर की धरती को रोने न देंगे।
आतंकवाद बीजों को बोने न देंगे॥
लक्ष्मीबाई सी दीवानी कहाँ है?
मुरझाया चेहरा रवानी कहाँ है?॥

जिन युवकों में देश भक्ति नहीं है।
वे कमजोर है? उन में शक्ति नहीं है॥
अब बच्चों पर निगरानी कहाँ है?
मुरझाया चेहरा रवानी कहाँ है?॥
यदि बनना है कुछ तो दयानन्द बन जाओ।
भगत सिंह बन जाओ, श्रद्धानन्द बन जाओ॥
ज्ञान की गंगा में गोता लगा लो।
वेदों के पथपर चल जीवन बना लो॥
चोरों की दुनियाँ में बेईमानी कहाँ है?
मुरझाया चेहरा रवानी कहाँ है?
ब्रह्मचर्य का पालन युवक करते नहीं है।
गीता के पथ पर वे चलते नहीं है।
दुष्टों के घर में शैतानी कहाँ है।
मुरझाया चेहरा रवानी कहाँ हैं?
वेदों के पथपर युवक चलते नहीं हैं।
अच्छी पुस्तकें वे पढ़ते नही हैं॥
ऋषियों के पथपर चलते नहीं है।
इसलिये आगे के बढ़ते नहीं है॥

ऋषि-मुनियों भी अब कहानी कहाँ है।
मुरझाया चेहरा खानी कहाँ हैं?
ऋषि मुनियों का भारत कहा जा रहा है?
सोम के पथ पर न कोई चल रहा है।
वेद शास्त्रों से अब कौन पढ़ेगा?
हर कोई गंदे गीत गा रहा है॥
मीराबाई जैसी दीवानी कहाँ है?
मुरझाया चेहरा रवानी कहाँ है?
विवेकानन्द बनकर कौन दिखायेगा?
विदेशो मे जाकर कौन ज्ञान सिन्धु बहायेगा॥
भगत सिंह बनकर जगत को दिखा दो।
हम क्या है? यह भुवन को बता दो॥
नेता सुभाष जैसी जवानी कहाँ है?।
मुरझाया चेहरा, रवानी कहाँ है?॥

रचचिता
डॉ. रवीन्द्र कुमार शास्त्री "सोम"

राज्यस्तरीय युवा चेतना शिविर सम्पन्न

आर्षज्योति गुरुकुल आश्रम कोसरंगी महासमुन्द में २३ दिसम्बर से २७ दिसम्बर २०१५ को राज्यस्तरीय युवा चेतना शिविर का आयोजन सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रदेश के अनेक विद्यालयों के छात्रों ने योगासन, जूडो कराटे के साथ-साथ वैदिक धर्म की शिक्षा प्राप्त किये।

शिविरार्थियों को बौद्धिक शिक्षा प्रदान करने के लिये संस्कृत विद्यामण्डलम् के अध्यक्ष डां. गणेश कौशिक, सचिव सुरेश शर्मा, अपेक्स बैंक के अध्यक्ष व भारतीय जनता पार्टी के नेता अशोक बजाज, मुख्यमन्त्री छ. ग. शासन के निजी सहालकर डॉ. अशोक चतुर्वेदी, रायपुर एम्स के डीन डां. सूर्यप्रकाश धनेरिया, गुजरात से पधारे स्वामी शान्तानन्द जी महाराज आदि अनेक गणमान्य विद्वानों एवं स्थानीय नेतागण उपस्थित रहे।

इस पंचदिवसीय शिविर में युवाओं को शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक स्तर पर विशेष प्रशिक्षण दिया गया। कपिलदेव शास्त्री, मुकेश शास्त्री, दु:खनाशन आर्य आदि अनेक व्यायाम शिक्षकों ने कुम्फू कराटे, योगासन आदि के प्रशिक्षण द्वारा आत्मरक्षा के गुर सिखाये। इस शिविर के साथ-साथ अथर्ववेद पारायण महायज्ञ की भी पूर्णाहुति २७ दिसम्बर को की गई। इस सम्पूर्ण आयोजन के प्रेरणाश्रोत स्वामी धर्मानन्द सरस्वती व गुरुकुल के आचार्य कोमल कुमार ने अपने सहयोगियों के साथ इस आयोजन को सुव्यवस्थित सम्पन्न किया।